



Yuvraj Seddharth

23 Oct 1990

11:28 PM

New Delhi

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 111490301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 23/10/1990
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 23:28:00 घंटे
इष्ट _____: 42:32:50 घटी
स्थान _____: New Delhi
राज्य _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:36:50 उत्तर
रेखांश _____: 77:12:32 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:10 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 23:06:50 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:38 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:14:23 घंटे
सूर्योदय _____: 06:26:52 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:44:01 घंटे
दिनमान _____: 11:17:09 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 06:20:23 तुला
लग्न के अंश _____: 04:32:11 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: मूल - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ये-येरुसलम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	कार्तिक	1
पंजाबी	संवत : 2047	कार्तिक	7
बंगाली	सन् : 1397	कार्तिक	6
तमिल	संवत : 2047	आइपसी	7
केरल	कोल्लम : 1166	तुलम	6
नेपाली	संवत : 2047	कार्तिक	7
चैत्रादि	संवत : 2047	कार्तिक	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2047	कार्तिक	शुक्ल 5

पंचांग

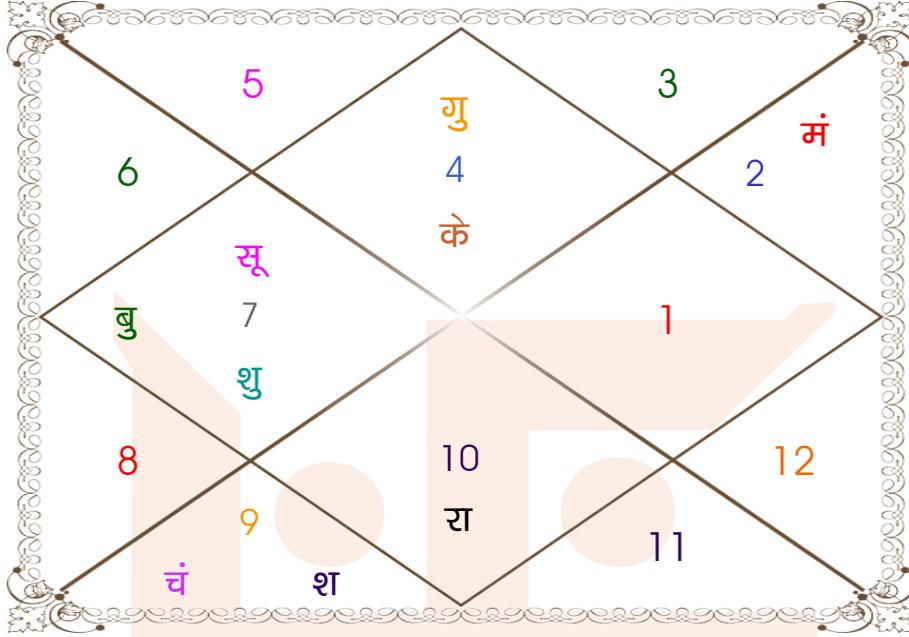
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:27:05
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:48:19 घंटे
जन्म योग _____ : मूल
सूर्योदय कालीन योग _____ : शोभन
योग समाप्ति काल _____ : 19:46:53 घंटे
जन्म योग _____ : अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 19:07:49 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 11:39:11
भभोग _____ : 67:40:44
भोग्य दशा काल _____ : केतु 5 वर्ष 9 मा 17 दि

घात चक्र

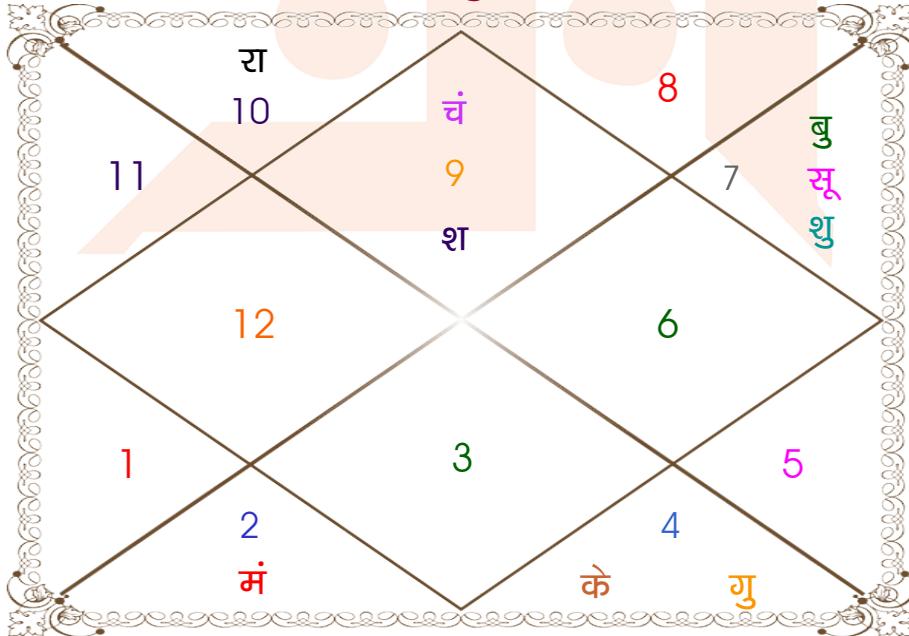
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		मं	
			के ल गु
रा			
श चं		शु सू बु	

लग्न कुण्डली

मं		
के ल गु		रा
	बु सू शु	चं श

विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 9मा 17दि
केतु

23/10/1990

11/08/2109

केतु	10/08/1996
शुक्र	10/08/2016
सूर्य	10/08/2022
चन्द्र	10/08/2032
मंगल	11/08/2039
राहु	10/08/2057
गुरु	10/08/2073
शनि	10/08/2092
बुध	11/08/2109

योगिनी

उल्का 4वर्ष 11मा 18दि

उल्का

12/10/2025

12/10/2031

उल्का	12/10/2026
सिद्धा	12/12/2027
संकटा	12/04/2029
मंगला	12/06/2029
पिंगला	12/10/2029
धान्या	12/04/2030
भ्रामरी	12/12/2030
भद्रिका	12/10/2031

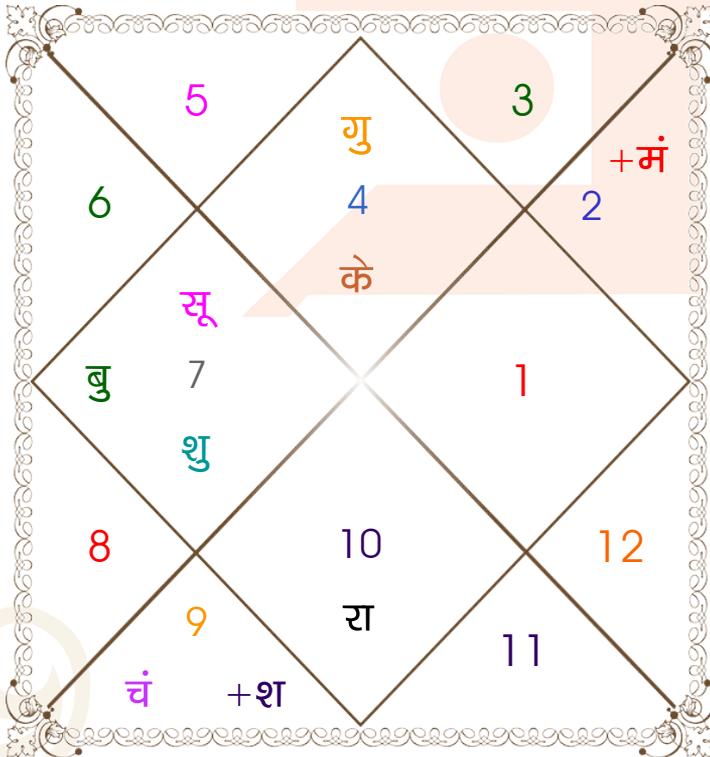
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	04:32:11	307:32:39	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य			तुला	06:20:23	00:59:46	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	नीच राशि
चंद्र			धनु	02:17:31	11:48:08	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
मंगल	व		वृष	20:46:03	00:02:36	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	तुला	07:23:20	01:39:27	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	मित्र राशि
गुरु			कर्क	17:40:54	00:06:40	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	उच्च राशि
शुक्र		अ	तुला	04:04:14	01:15:10	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	मूलत्रिकोण
शनि			धनु	25:44:05	00:02:57	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	सम राशि
राहु	व		मक	08:55:17	00:04:48	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	08:55:17	00:04:48	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			धनु	12:30:27	00:01:56	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
नेप			धनु	18:18:45	00:00:59	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	23:16:14	00:02:20	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
दशम भाव			मीन	26:24:39	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	गुरु	--

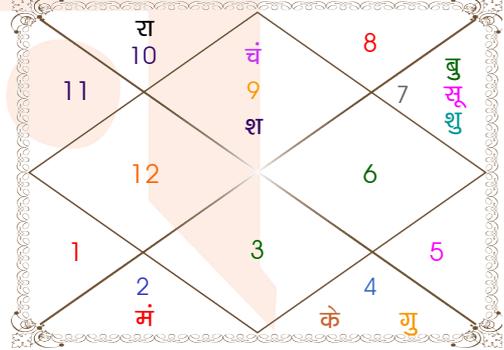
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:56

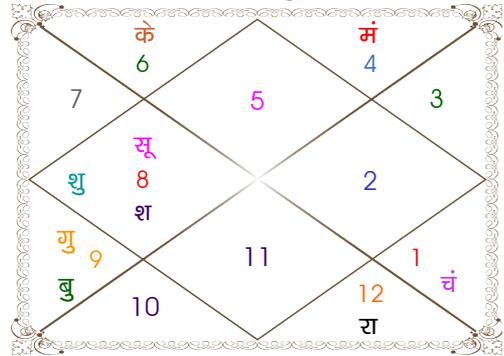
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 18:10:55	कर्क 04:32:11
2	कर्क 18:10:55	सिंह 01:49:40
3	सिंह 15:28:25	सिंह 29:07:09
4	कन्या 12:45:54	कन्या 26:24:39
5	तुला 12:45:54	तुला 29:07:09
6	वृश्चिक 15:28:25	धनु 01:49:40
7	धनु 18:10:55	मकर 04:32:11
8	मकर 18:10:55	कुम्भ 01:49:40
9	कुम्भ 15:28:25	कुम्भ 29:07:09
10	मीन 12:45:54	मीन 26:24:39
11	मेष 12:45:54	मेष 29:07:09
12	वृष 15:28:25	मिथुन 01:49:40

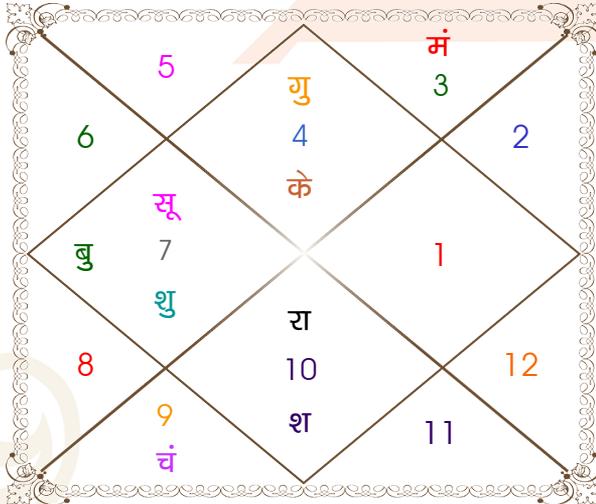
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	04:32:11
2	कर्क	27:49:33
3	सिंह	24:46:09
4	कन्या	26:24:39
5	वृश्चिक	00:49:13
6	धनु	04:10:14
7	मकर	04:32:11
8	मकर	27:49:33
9	कुम्भ	24:46:09
10	मीन	26:24:39
11	वृष	00:49:13
12	मिथुन	04:10:14

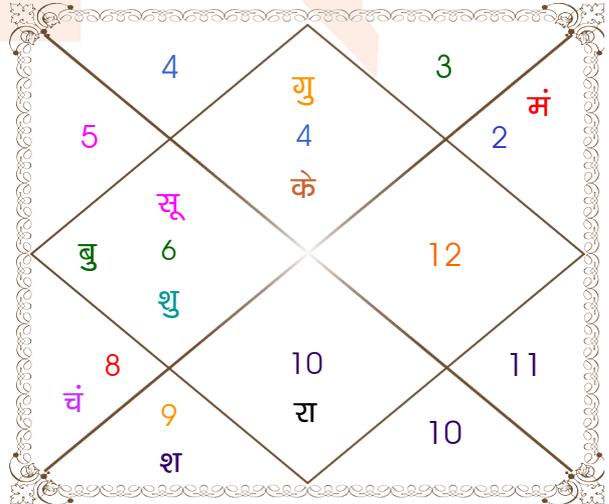
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



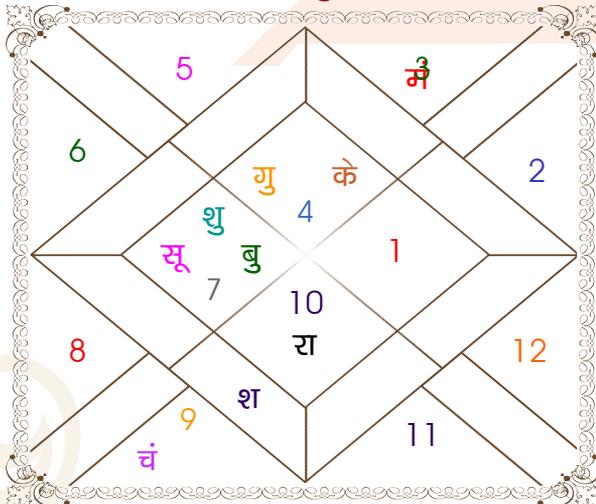
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	भीत	भोजन	0.08	31 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	शक्त	सभा	0.73	66 %
मंगल	अमात्य	भातृ	कुमार	निपीदित	गमन	0.93	55 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	गमन	0.00	47 %
गुरु	भातृ	धन	युवा	दीप्त	कौतुक	19.52	34 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	विकल	गमन	0.63	46 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	शक्त	भोजन	1.59	46 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	गमन	0.00	67 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	मुदित	गमन	0.00	67 %
कुल						23.48	

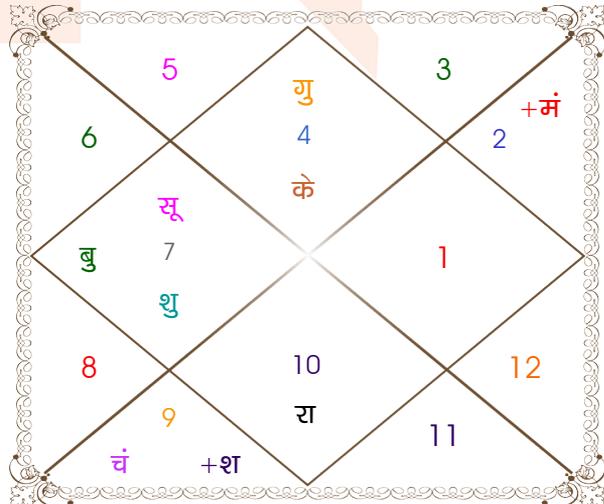
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

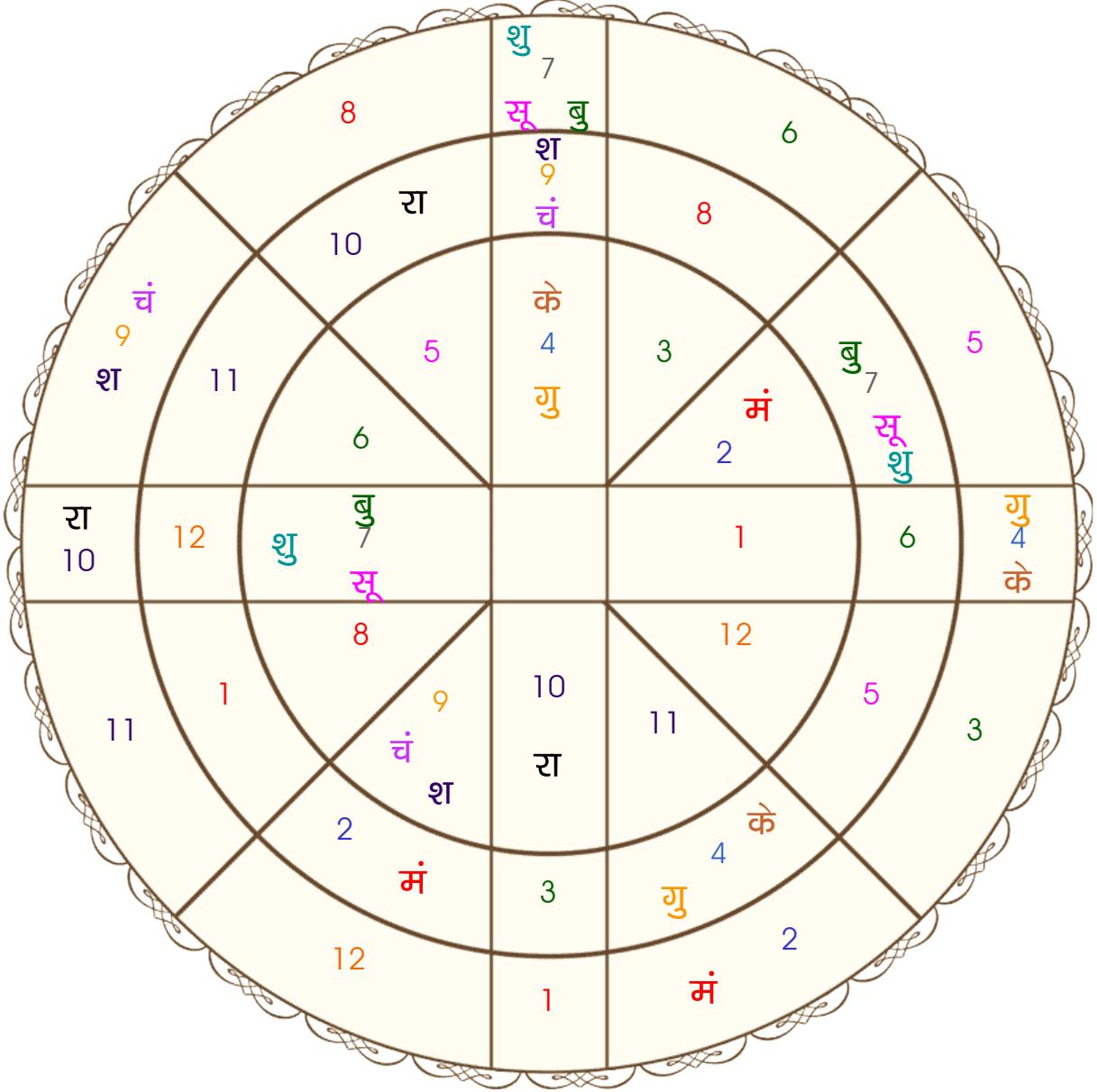
चलित कुंडली



लग्न-चलित



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

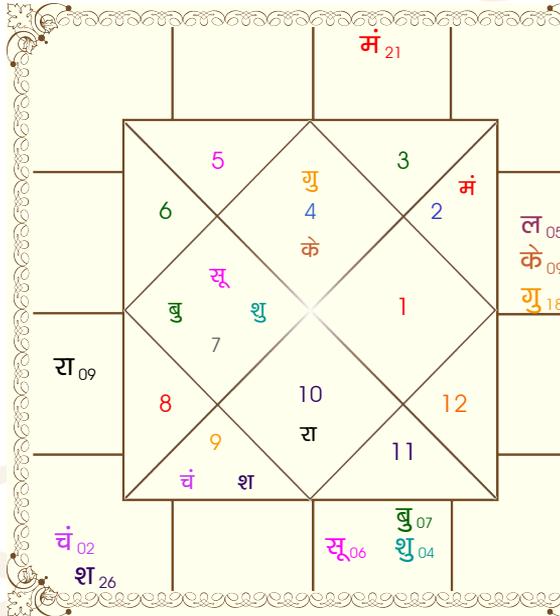
भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 8 मास 26 दिन

ग्रह						निरयण भाव								
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	06:26:48	शुक्र	मंगल	चंद्र	शुक्र	1	कर्क	04:38:36	चंद्र	शनि	शनि	चंद्र
चंद्र		धनु	02:23:56	गुरु	केतु	शुक्र	शनि	2	कर्क	27:55:58	चंद्र	बुध	शनि	शनि
मंगल		वृष	20:52:28	शुक्र	चंद्र	शुक्र	सूर्य	3	सिंह	24:52:35	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुध		तुला	07:29:46	शुक्र	राहु	राहु	शनि	4	कन्या	26:31:04	बुध	मंगल	गुरु	शनि
गुरु		कर्क	17:47:19	चंद्र	बुध	बुध	राहु	5	वृश्चि	00:55:38	मंगल	गुरु	मंगल	शनि
शुक्र		तुला	04:10:39	शुक्र	मंगल	शुक्र	शनि	6	धनु	04:16:40	गुरु	केतु	चंद्र	शनि
शनि		धनु	25:50:30	गुरु	शुक्र	बुध	शनि	7	मक	04:38:36	शनि	सूर्य	शनि	राहु
राहु	व	मक	09:01:42	शनि	सूर्य	शुक्र	गुरु	8	मक	27:55:58	शनि	मंगल	शनि	शनि
केतु	व	कर्क	09:01:42	चंद्र	शनि	शुक्र	राहु	9	कुंभ	24:52:35	शनि	गुरु	बुध	मंगल
हर्ष		धनु	12:36:52	गुरु	केतु	बुध	राहु	10	मीन	26:31:04	गुरु	बुध	गुरु	शनि
नेप		धनु	18:25:11	गुरु	शुक्र	राहु	गुरु	11	वृष	00:55:38	शुक्र	सूर्य	राहु	सूर्य
प्लूटो		तुला	23:22:39	शुक्र	गुरु	शनि	राहु	12	मिथु	04:16:40	बुध	मंगल	शुक्र	शनि

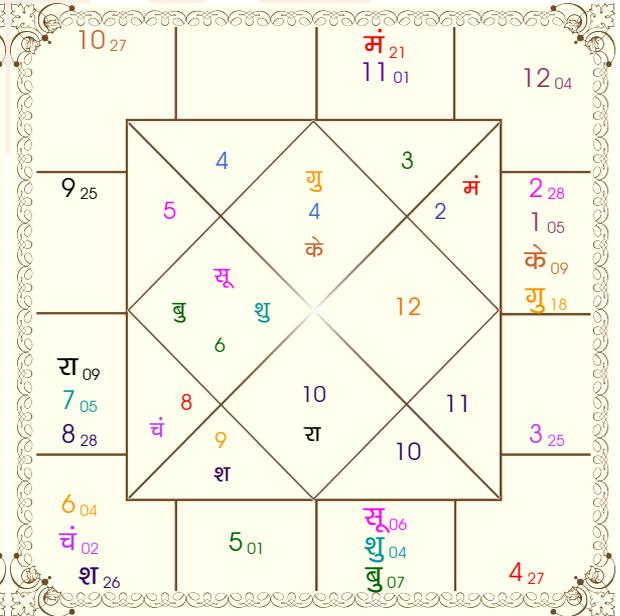
के.पी. अयनांश : 23:37:31

फॉरच्युना : कन्या 00:35:44

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र+ मंगल- गुरु, केतु,
2	चंद्र- मंगल-
3	सूर्य- राहु-
4	सूर्य, बुध, गुरु+ शुक्र, शनि, राहु,
5	सूर्य- चंद्र, मंगल+ शुक्र-
6	गुरु- शनि, केतु,
7	बुध, शनि- राहु, केतु-
8	शनि- केतु-
9	शनि- केतु-
10	गुरु-
11	सूर्य, मंगल, शुक्र+ शनि-
12	बुध- गुरु-

ग्रह कारकत्व

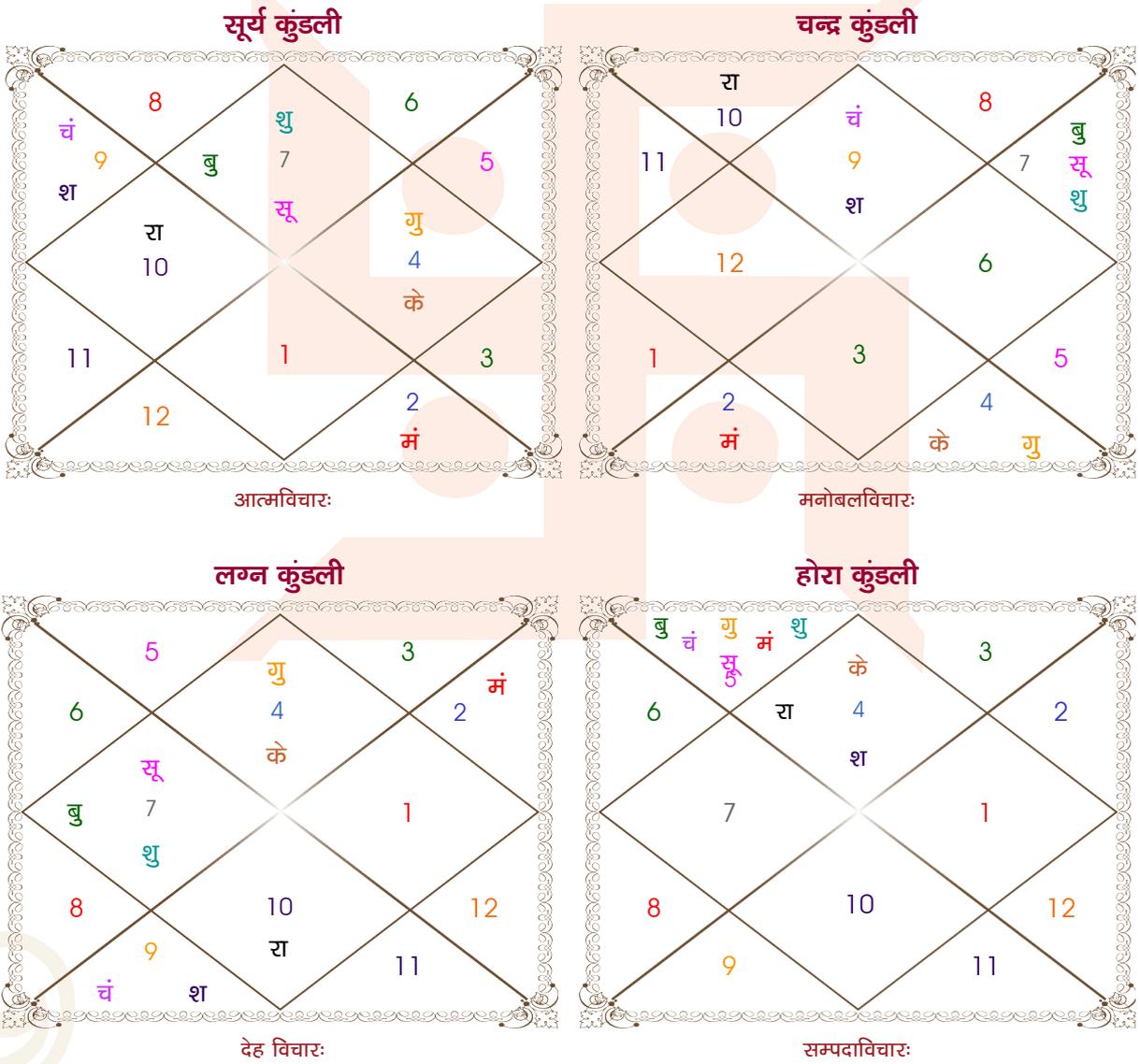
ग्रह	भाव
सूर्य	3- 4, 5- 11,
चंद्र	1+ 2- 5,
मंगल	1- 2- 5+ 11,
बुध	4, 7, 12-
गुरु	1, 4+ 6- 10- 12-
शुक्र	4, 5- 11+
शनि	4, 6, 7- 8- 9- 11-
राहु	3- 4, 7,
केतु	1, 6, 7- 8- 9-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	चंद्र
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

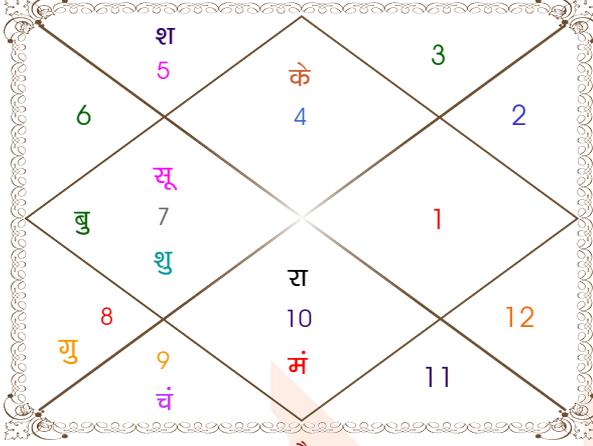
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



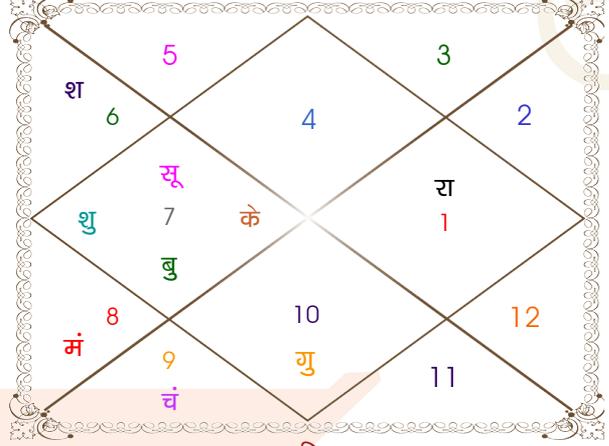
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



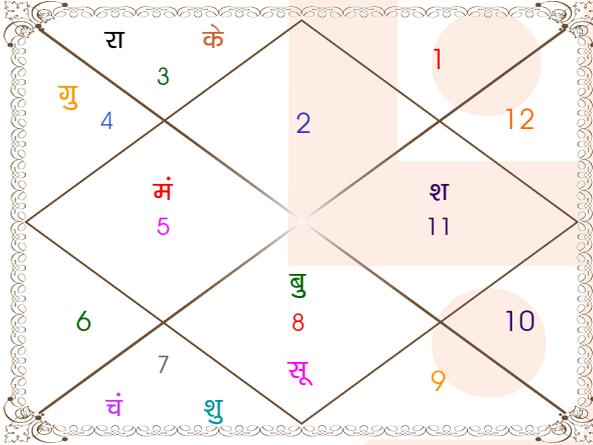
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



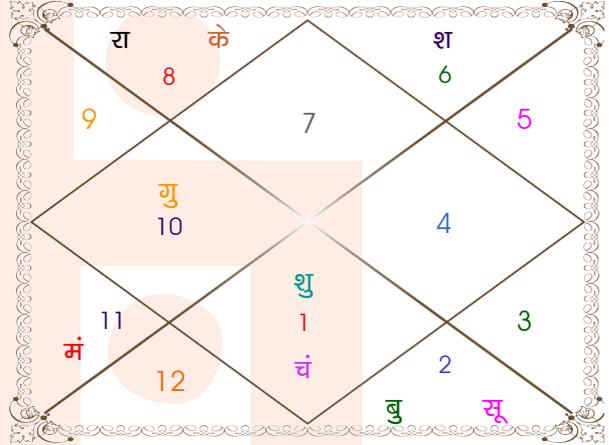
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



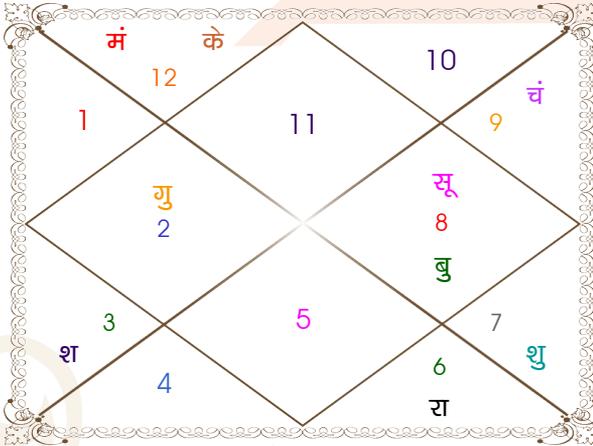
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



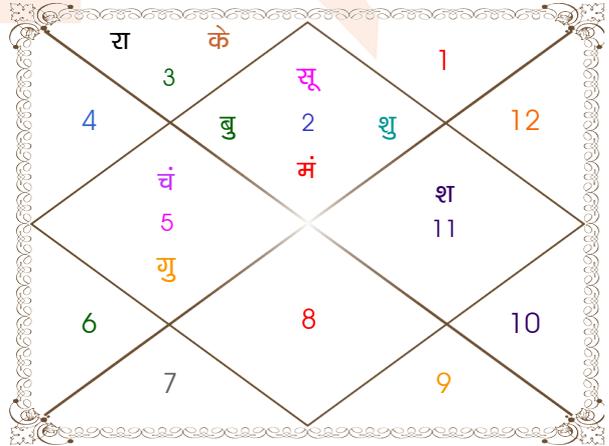
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

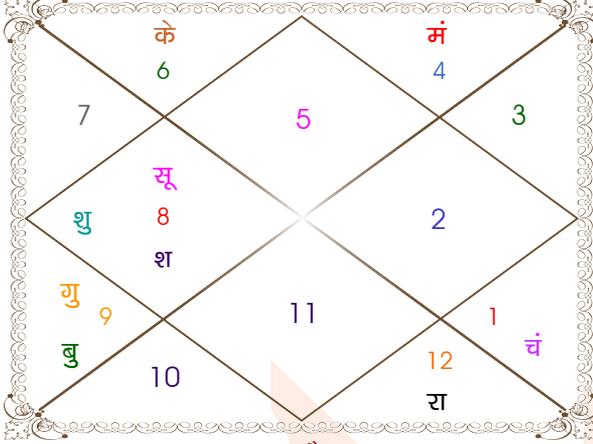
अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

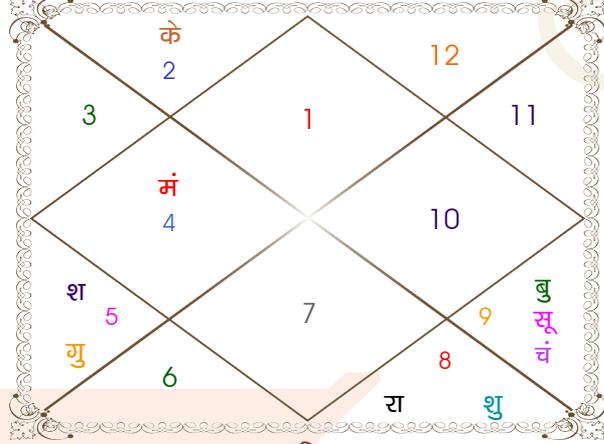
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



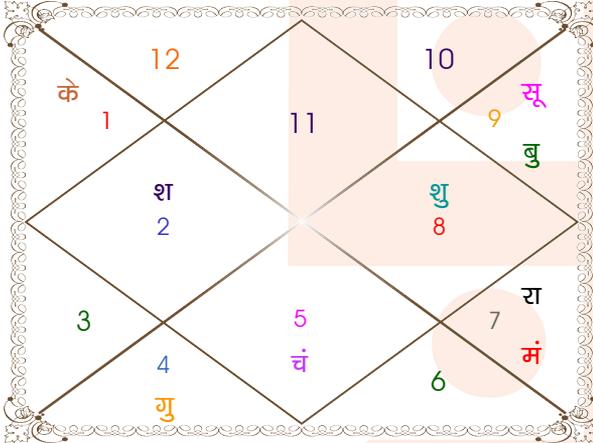
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



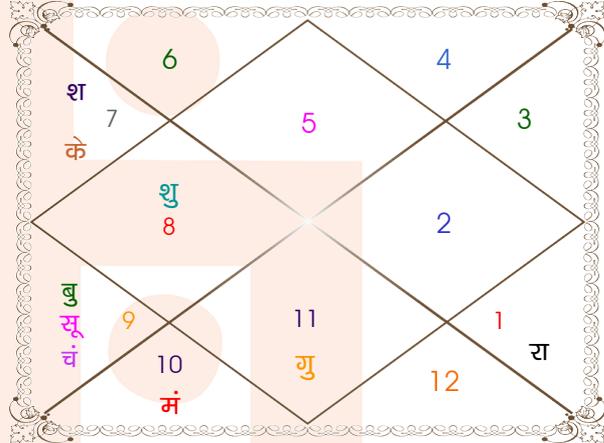
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



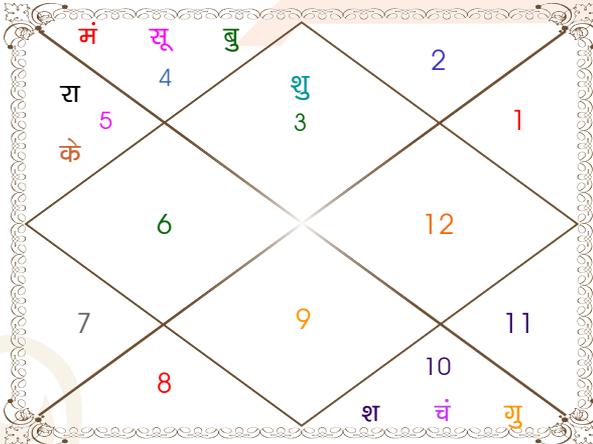
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



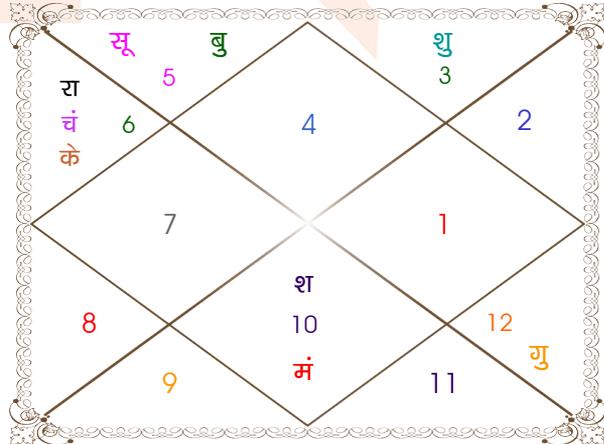
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

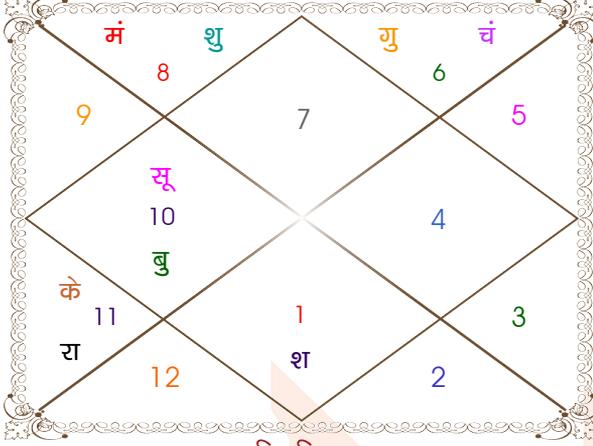
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

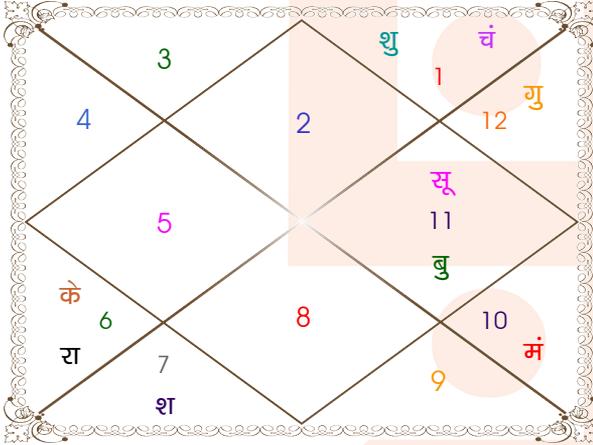
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



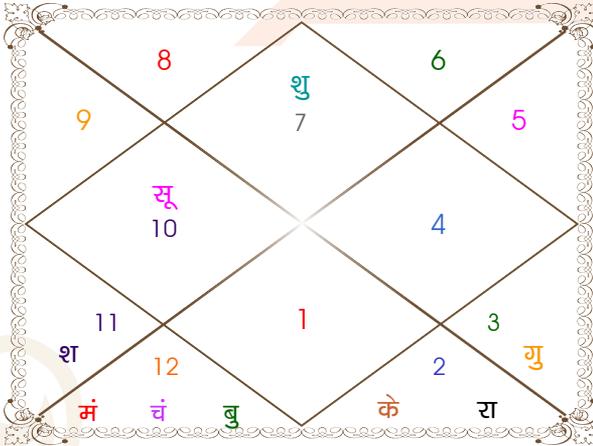
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



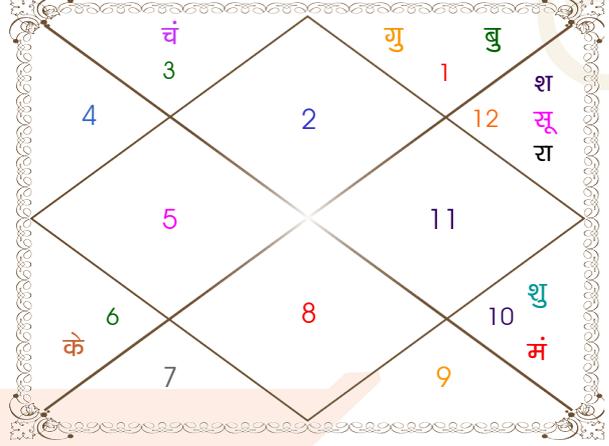
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



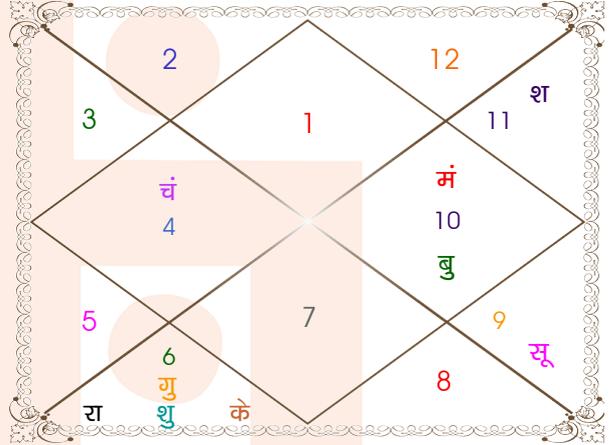
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



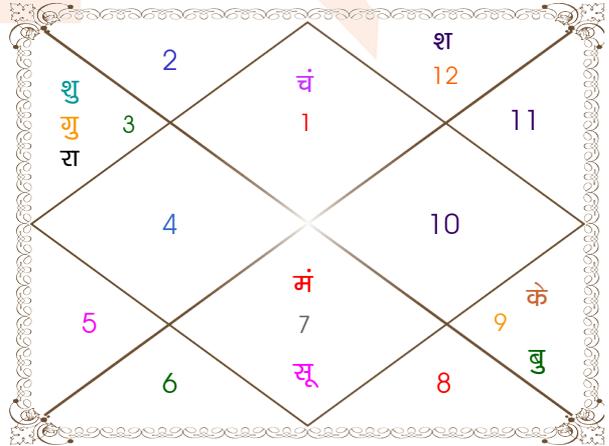
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	तुला	धनु	वृष	तुला	कर्क	तुला	धनु	मक	कर्क
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कर्क	तुला	धनु	मक	तुला	वृश्चि	तुला	सिंह	मक	कर्क
चतुर्थांश	कर्क	तुला	धनु	वृश्चि	तुला	मक	तुला	कन्या	मेष	तुला
सप्तमांश	कुंभ	वृश्चि	धनु	मीन	वृश्चि	वृष	तुला	मिथु	कन्या	मीन
नवमांश	सिंह	वृश्चि	मेष	कर्क	धनु	धनु	वृश्चि	वृश्चि	मीन	कन्या
दशमांश	मेष	धनु	धनु	कर्क	धनु	सिंह	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	सिंह	धनु	धनु	मक	धनु	कुंभ	वृश्चि	तुला	मेष	तुला
षोडशांश	मिथु	कर्क	मक	कर्क	कर्क	मक	मिथु	मक	सिंह	सिंह
विंशांश	कर्क	सिंह	कन्या	मक	सिंह	मीन	मिथु	मक	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	तुला	मक	कन्या	वृश्चि	मक	कन्या	वृश्चि	मेष	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	वृष	मीन	मिथु	मक	मेष	मेष	मक	मीन	मीन	कन्या
त्रिंशांश	वृष	कुंभ	मेष	मक	कुंभ	मीन	मेष	तुला	कन्या	कन्या
खवेदांश	मेष	धनु	कर्क	मक	मक	कन्या	कन्या	कुंभ	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	तुला	मक	मीन	मीन	मीन	मिथु	तुला	कुंभ	वृष	वृष
षष्ट्यंश	मेष	तुला	मेष	तुला	धनु	मिथु	मिथु	मीन	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	8 चन्दनवन
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
राहु	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.30	8.10	8.05	12.00	15.10	13.30	8.55	13.00	9.30
सप्तवर्ग	9.80	8.10	9.35	11.50	14.45	13.63	9.83	12.90	9.30
दशवर्ग	10.18	7.83	8.73	12.53	12.85	11.73	10.60	12.83	9.48
षोडशवर्ग	10.10	8.70	9.18	12.48	13.00	12.13	10.43	12.93	10.00

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	1	10	22	53	56	2	38
सप्तवर्गज बल	79	45	53	71	124	118	83
ओजयुग्मक बल	15	0	0	30	15	15	15
केन्द्र बल	60	15	30	60	60	60	15
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	170	70	105	214	255	195	151
कुल दिग्बल	3	38	42	29	56	57	57
नतोन्नत बल	3	57	57	60	3	3	57
पक्ष बल	41	83	41	41	19	19	41
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	30	60	59	46	52	16	58
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	104	214	202	207	134	98	157
कुल चेष्टाबल	0	0	53	1	29	1	27
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-9	-5	-20	-8	-28	-10	-18
कुल षट्बल	329	369	398	468	480	384	381
रूप षट्बल	5.5	6.1	6.6	7.8	8.0	6.4	6.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.0	1.3	1.1	1.2	1.2	1.3
संबंधित पद	6	7	1	5	3	4	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	4.94	13.49	34.32	6.17	40.47	1.69	31.88
कष्ट फल	48.50	45.58	16.72	21.03	11.38	58.21	27.02

भाव बल

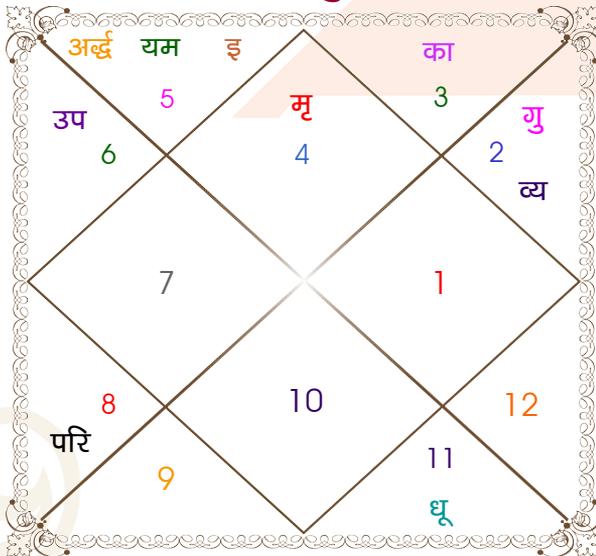
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	369	329	329	468	384	480	381	381	381	480	398	468
भावदिग्बल	30	20	10	30	20	10	30	10	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	-10	-22	-19	2	35	45	63	75	18	75	51	15
कुल भाव बल	388	327	319	500	440	535	474	466	419	556	499	533
रूप भाव बल	6.5	5.4	5.3	8.3	7.3	8.9	7.9	7.8	7.0	9.3	8.3	8.9
संबंधित पद	10	11	12	4	8	2	6	7	9	1	5	3

उपग्रह एवं आरूढ़

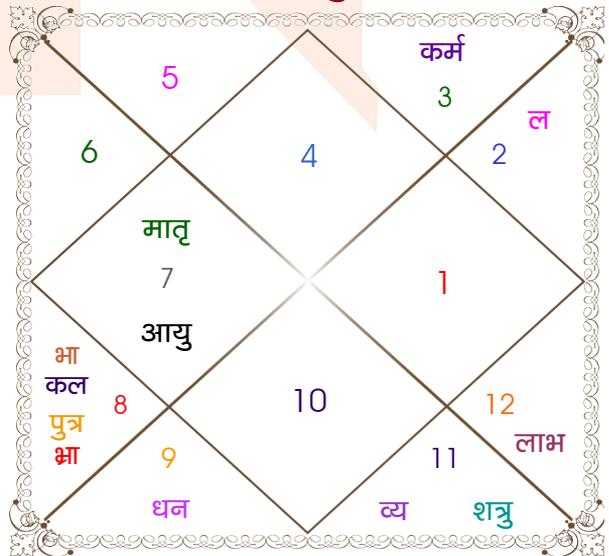
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कर्क	04:32:11	--	--	पुष्य	1	8
गुलिक	गु	वृष	06:16:11	--	--	कृतिका	3	3
काल	का	मिथु	00:47:20	--	--	मृगशिरा	3	5
मृत्यु	मृ	कर्क	12:31:06	--	--	पुष्य	3	8
यमघंटक	यम	सिंह	23:45:40	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	03:09:45	--	--	मघा	1	10
धूम	धू	कुंभ	19:40:23	नीच	--	शतभिषा	4	24
व्यतिपात	व्य	वृष	10:19:37	नीच	--	रोहिणी	1	4
परिवेश	परि	वृश्चि	10:19:37	--	--	अनुराधा	3	17
इन्द्रचाप	इ	सिंह	19:40:23	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
उपकेतु	उप	कन्या	06:20:23	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12

प्राणपद	:	धनु	11:59:33	कारकौश लग्न	:	वृश्चि	21:36:42
भाव लग्न	:	मीन	19:49:08	होरा लग्न	:	धनु	05:06:06
घटी लग्न	:	मेष	22:45:10	वर्णद लग्न	:	मेष	20:21:44

उपग्रह कुंडली



आरूढ़ कुंडली



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
कुल	4	3	5	3	3	5	3	5	5	3	4	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	5	3	6	2	6	6	3	5	5	3	5	0	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
बुध	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	3	3	5	3	2	1	6	0	4	5	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
कुल	5	2	6	4	6	5	1	5	6	4	6	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	5	7	1	5	6	3	5	5	4	5	5	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	5	4	3	3	6	6	4	4	2	5	7	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	2	1	3	3	4	6	2	4	3	4	5	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	4	6	4	5	4	4	5	2	7	1	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	2	4	3	4	5	2	2	1	3	3	39
गुरु	5	5	5	5	7	1	5	6	3	5	5	4	56
मंगल	2	5	3	3	5	3	2	1	6	0	4	5	39
सूर्य	3	5	5	3	4	5	4	3	5	3	3	5	48
शुक्र	4	4	2	5	7	3	5	4	3	3	6	6	52
बुध	1	5	6	4	6	4	5	2	6	4	6	5	54
चंद्र	6	6	3	5	5	3	5	0	5	3	6	2	49
बिन्दु	25	36	26	29	37	23	31	18	30	19	33	30	337
रेखा	31	20	30	27	19	33	25	38	26	37	23	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	0	2	1	3	3	0	0	0	1	1	18
गुरु	2	4	0	1	4	0	0	2	0	4	0	0	17
मंगल	0	5	1	2	3	3	0	0	4	0	2	4	24
सूर्य	0	2	2	0	1	2	1	0	2	0	0	2	12
शुक्र	1	1	0	1	4	0	3	0	0	0	4	2	16
बुध	0	1	1	2	5	0	0	0	5	0	1	3	18
चंद्र	1	3	0	5	0	0	2	0	0	0	3	2	16
रेखा	6	21	4	13	18	8	9	2	11	4	11	14	121

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	0	2	1	3	3	0	0	0	1	1	18
गुरु	0	4	0	1	4	0	0	0	0	4	0	0	13
मंगल	0	5	1	2	3	2	0	0	4	0	2	0	19
सूर्य	0	2	0	0	1	0	1	0	2	0	0	0	6
शुक्र	1	1	0	1	4	0	3	0	0	0	4	2	16
बुध	0	1	1	2	5	0	0	0	5	0	1	0	15
चंद्र	1	3	0	5	0	0	2	0	0	0	3	2	16
रेखा	4	21	2	13	18	5	9	0	11	4	11	5	103

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	55	128	164	132	104	150	141
ग्रह पिंड	53	108	100	78	42	69	111
शोध्य पिंड	108	236	264	210	146	219	252

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग																																																																														
<table border="1"> <tr><td>4</td><td>5</td></tr> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td></tr> <tr><td>7</td><td>3</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td></tr> <tr><td>3</td><td>9</td></tr> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> </table>	4	5	5	3	6	4	7	3	8	10	3	9	5	3	<table border="1"> <tr><td>37</td><td>26</td></tr> <tr><td>23</td><td>5</td><td>29</td><td>3</td><td>36</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>3</td><td>6</td></tr> <tr><td>31</td><td>25</td></tr> <tr><td>7</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>30</td></tr> <tr><td>18</td><td>9</td><td>11</td><td>33</td></tr> <tr><td>30</td><td>3</td><td>11</td><td>2</td></tr> </table>	37	26	23	5	29	3	36	6	4	2	3	6	31	25	7	1	8	10	12	30	18	9	11	33	30	3	11	2	<table border="1"> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td><td>6</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>6</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>6</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>2</td></tr> <tr><td>0</td><td>9</td><td>3</td><td>11</td><td>2</td></tr> <tr><td>5</td><td>6</td></tr> </table>	5	3	3	5	6	6	4	2	6	5	7	6	1	8	10	12	2	0	9	3	11	2	5	6												
4	5																																																																															
5	3																																																																															
6	4																																																																															
7	3																																																																															
8	10																																																																															
3	9																																																																															
5	3																																																																															
37	26																																																																															
23	5	29	3	36																																																																												
6	4	2	3	6																																																																												
31	25																																																																															
7	1																																																																															
8	10	12	30																																																																													
18	9	11	33																																																																													
30	3	11	2																																																																													
5	3																																																																															
3	5	6																																																																														
6	4	2	6																																																																													
5	7	6	1																																																																													
8	10	12	2																																																																													
0	9	3	11	2																																																																												
5	6																																																																															
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग																																																																														
<table border="1"> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td><td>5</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>5</td></tr> <tr><td>2</td><td>7</td><td>2</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>5</td></tr> <tr><td>1</td><td>9</td><td>0</td><td>11</td><td>4</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td></tr> </table>	5	3	3	5	5	6	4	2	5	2	7	2	1	8	10	12	5	1	9	0	11	4	6	4	<table border="1"> <tr><td>6</td><td>6</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td><td>4</td><td>3</td><td>5</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>5</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>1</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>5</td></tr> <tr><td>2</td><td>9</td><td>4</td><td>11</td><td>6</td></tr> <tr><td>6</td><td>6</td></tr> </table>	6	6	4	5	4	3	5	6	4	2	5	5	7	1	1	8	10	12	5	2	9	4	11	6	6	6	<table border="1"> <tr><td>7</td><td>5</td></tr> <tr><td>1</td><td>5</td><td>5</td><td>3</td><td>5</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>5</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>5</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>4</td></tr> <tr><td>6</td><td>9</td><td>5</td><td>11</td><td>5</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td></tr> </table>	7	5	1	5	5	3	5	6	4	2	5	5	7	5	1	8	10	12	4	6	9	5	11	5	3	5		
5	3																																																																															
3	5	5																																																																														
6	4	2	5																																																																													
2	7	2	1																																																																													
8	10	12	5																																																																													
1	9	0	11	4																																																																												
6	4																																																																															
6	6																																																																															
4	5	4	3	5																																																																												
6	4	2	5																																																																													
5	7	1	1																																																																													
8	10	12	5																																																																													
2	9	4	11	6																																																																												
6	6																																																																															
7	5																																																																															
1	5	5	3	5																																																																												
6	4	2	5																																																																													
5	7	5	1																																																																													
8	10	12	4																																																																													
6	9	5	11	5																																																																												
3	5																																																																															
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग																																																																														
<table border="1"> <tr><td>7</td><td>2</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td><td>5</td><td>3</td><td>4</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>4</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>4</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>6</td></tr> <tr><td>4</td><td>9</td><td>3</td><td>11</td><td>6</td></tr> <tr><td>3</td><td>6</td></tr> </table>	7	2	3	5	5	3	4	6	4	2	4	5	7	4	1	8	10	12	6	4	9	3	11	6	3	6	<table border="1"> <tr><td>3</td><td>2</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td><td>4</td><td>3</td><td>6</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>6</td></tr> <tr><td>5</td><td>7</td><td>4</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>3</td></tr> <tr><td>2</td><td>9</td><td>1</td><td>11</td><td>3</td></tr> <tr><td>2</td><td>3</td></tr> </table>	3	2	4	5	4	3	6	6	4	2	6	5	7	4	1	8	10	12	3	2	9	1	11	3	2	3	<table border="1"> <tr><td>3</td><td>1</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td><td>4</td><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td><td>2</td><td>7</td></tr> <tr><td>6</td><td>7</td><td>2</td><td>1</td></tr> <tr><td>8</td><td>10</td><td>12</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>9</td><td>4</td><td>11</td><td>5</td></tr> <tr><td>5</td><td>4</td></tr> </table>	3	1	4	5	4	3	7	6	4	2	7	6	7	2	1	8	10	12	5	4	9	4	11	5	5	4
7	2																																																																															
3	5	5	3	4																																																																												
6	4	2	4																																																																													
5	7	4	1																																																																													
8	10	12	6																																																																													
4	9	3	11	6																																																																												
3	6																																																																															
3	2																																																																															
4	5	4	3	6																																																																												
6	4	2	6																																																																													
5	7	4	1																																																																													
8	10	12	3																																																																													
2	9	1	11	3																																																																												
2	3																																																																															
3	1																																																																															
4	5	4	3	7																																																																												
6	4	2	7																																																																													
6	7	2	1																																																																													
8	10	12	5																																																																													
4	9	4	11	5																																																																												
5	4																																																																															

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 9 मास 17 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
23/10/1990	10/08/1996	10/08/2016	10/08/2022	10/08/2032
10/08/1996	10/08/2016	10/08/2022	10/08/2032	11/08/2039
23/10/1990	शुक्र 10/12/1999	सूर्य 27/11/2016	चंद्र 11/06/2023	मंगल 06/01/2033
शुक्र 08/03/1991	सूर्य 10/12/2000	चंद्र 29/05/2017	मंगल 10/01/2024	राहु 24/01/2034
सूर्य 14/07/1991	चंद्र 10/08/2002	मंगल 04/10/2017	राहु 11/07/2025	गुरु 31/12/2034
चंद्र 12/02/1992	मंगल 10/10/2003	राहु 29/08/2018	गुरु 10/11/2026	शनि 09/02/2036
मंगल 10/07/1992	राहु 10/10/2006	गुरु 17/06/2019	शनि 10/06/2028	बुध 05/02/2037
राहु 29/07/1993	गुरु 10/06/2009	शनि 29/05/2020	बुध 09/11/2029	केतु 04/07/2037
गुरु 05/07/1994	शनि 10/08/2012	बुध 04/04/2021	केतु 10/06/2030	शुक्र 04/09/2038
शनि 14/08/1995	बुध 11/06/2015	केतु 10/08/2021	शुक्र 09/02/2032	सूर्य 09/01/2039
बुध 10/08/1996	केतु 10/08/2016	शुक्र 10/08/2022	सूर्य 10/08/2032	चंद्र 11/08/2039

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
11/08/2039	10/08/2057	10/08/2073	10/08/2092	11/08/2109
10/08/2057	10/08/2073	10/08/2092	11/08/2109	00/00/0000
राहु 23/04/2042	गुरु 28/09/2059	शनि 13/08/2076	बुध 06/01/2095	केतु 07/01/2110
गुरु 15/09/2044	शनि 11/04/2062	बुध 23/04/2079	केतु 04/01/2096	शुक्र 24/10/2110
शनि 23/07/2047	बुध 16/07/2064	केतु 01/06/2080	शुक्र 03/11/2098	00/00/0000
बुध 09/02/2050	केतु 22/06/2065	शुक्र 01/08/2083	सूर्य 10/09/2099	00/00/0000
केतु 27/02/2051	शुक्र 21/02/2068	सूर्य 13/07/2084	चंद्र 09/02/2101	00/00/0000
शुक्र 27/02/2054	सूर्य 10/12/2068	चंद्र 12/02/2086	मंगल 07/02/2102	00/00/0000
सूर्य 22/01/2055	चंद्र 11/04/2070	मंगल 23/03/2087	राहु 26/08/2104	00/00/0000
चंद्र 22/07/2056	मंगल 17/03/2071	राहु 27/01/2090	गुरु 02/12/2106	00/00/0000
मंगल 10/08/2057	राहु 10/08/2073	गुरु 10/08/2092	शनि 11/08/2109	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 5 वर्ष 9 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु
23/10/1990	08/03/1991	14/07/1991	12/02/1992	10/07/1992
08/03/1991	14/07/1991	12/02/1992	10/07/1992	29/07/1993
00/00/0000	सूर्य 15/03/1991	चंद्र 01/08/1991	मंगल 21/02/1992	राहु 06/09/1992
00/00/0000	चंद्र 25/03/1991	मंगल 13/08/1991	राहु 14/03/1992	गुरु 27/10/1992
00/00/0000	मंगल 02/04/1991	राहु 14/09/1991	गुरु 03/04/1992	शनि 27/12/1992
00/00/0000	राहु 21/04/1991	गुरु 13/10/1991	शनि 27/04/1992	बुध 19/02/1993
00/00/0000	गुरु 08/05/1991	शनि 15/11/1991	बुध 18/05/1992	केतु 13/03/1993
23/10/1990	शनि 28/05/1991	बुध 16/12/1991	केतु 27/05/1992	शुक्र 16/05/1993
शनि 13/12/1990	बुध 15/06/1991	केतु 28/12/1991	शुक्र 20/06/1992	सूर्य 05/06/1993
बुध 11/02/1991	केतु 23/06/1991	शुक्र 02/02/1992	सूर्य 28/06/1992	चंद्र 06/07/1993
केतु 08/03/1991	शुक्र 14/07/1991	सूर्य 12/02/1992	चंद्र 10/07/1992	मंगल 29/07/1993

केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य
29/07/1993	05/07/1994	14/08/1995	10/08/1996	10/12/1999
05/07/1994	14/08/1995	10/08/1996	10/12/1999	10/12/2000
गुरु 12/09/1993	शनि 07/09/1994	बुध 04/10/1995	शुक्र 01/03/1997	सूर्य 29/12/1999
शनि 05/11/1993	बुध 03/11/1994	केतु 25/10/1995	सूर्य 01/05/1997	चंद्र 28/01/2000
बुध 24/12/1993	केतु 27/11/1994	शुक्र 24/12/1995	चंद्र 10/08/1997	मंगल 18/02/2000
केतु 12/01/1994	शुक्र 02/02/1995	सूर्य 11/01/1996	मंगल 20/10/1997	राहु 13/04/2000
शुक्र 10/03/1994	सूर्य 23/02/1995	चंद्र 11/02/1996	राहु 21/04/1998	गुरु 01/06/2000
सूर्य 27/03/1994	चंद्र 28/03/1995	मंगल 03/03/1996	गुरु 30/09/1998	शनि 29/07/2000
चंद्र 25/04/1994	मंगल 21/04/1995	राहु 26/04/1996	शनि 11/04/1999	बुध 18/09/2000
मंगल 15/05/1994	राहु 21/06/1995	गुरु 13/06/1996	बुध 30/09/1999	केतु 10/10/2000
राहु 05/07/1994	गुरु 14/08/1995	शनि 10/08/1996	केतु 10/12/1999	शुक्र 10/12/2000

शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि
10/12/2000	10/08/2002	10/10/2003	10/10/2006	10/06/2009
10/08/2002	10/10/2003	10/10/2006	10/06/2009	10/08/2012
चंद्र 29/01/2001	मंगल 04/09/2002	राहु 23/03/2004	गुरु 17/02/2007	शनि 10/12/2009
मंगल 06/03/2001	राहु 07/11/2002	गुरु 16/08/2004	शनि 21/07/2007	बुध 23/05/2010
राहु 05/06/2001	गुरु 03/01/2003	शनि 05/02/2005	बुध 06/12/2007	केतु 30/07/2010
गुरु 25/08/2001	शनि 11/03/2003	बुध 11/07/2005	केतु 01/02/2008	शुक्र 07/02/2011
शनि 30/11/2001	बुध 11/05/2003	केतु 12/09/2005	शुक्र 12/07/2008	सूर्य 06/04/2011
बुध 24/02/2002	केतु 05/06/2003	शुक्र 14/03/2006	सूर्य 30/08/2008	चंद्र 12/07/2011
केतु 31/03/2002	शुक्र 15/08/2003	सूर्य 08/05/2006	चंद्र 19/11/2008	मंगल 17/09/2011
शुक्र 11/07/2002	सूर्य 05/09/2003	चंद्र 07/08/2006	मंगल 15/01/2009	राहु 09/03/2012
सूर्य 10/08/2002	चंद्र 10/10/2003	मंगल 10/10/2006	राहु 10/06/2009	गुरु 10/08/2012

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 10/08/2012 11/06/2015	शुक्र - केतु 11/06/2015 10/08/2016	सूर्य - सूर्य 10/08/2016 27/11/2016	सूर्य - चंद्र 27/11/2016 29/05/2017	सूर्य - मंगल 29/05/2017 04/10/2017
बुध 03/01/2013 केतु 05/03/2013 शुक्र 24/08/2013 सूर्य 15/10/2013 चंद्र 09/01/2014 मंगल 11/03/2014 राहु 13/08/2014 गुरु 29/12/2014 शनि 11/06/2015	केतु 05/07/2015 शुक्र 15/09/2015 सूर्य 06/10/2015 चंद्र 10/11/2015 मंगल 05/12/2015 राहु 07/02/2016 गुरु 04/04/2016 शनि 10/06/2016 बुध 10/08/2016	सूर्य 15/08/2016 चंद्र 24/08/2016 मंगल 31/08/2016 राहु 16/09/2016 गुरु 01/10/2016 शनि 18/10/2016 बुध 03/11/2016 केतु 09/11/2016 शुक्र 27/11/2016	चंद्र 13/12/2016 मंगल 23/12/2016 राहु 20/01/2017 गुरु 13/02/2017 शनि 14/03/2017 बुध 09/04/2017 केतु 19/04/2017 शुक्र 20/05/2017 सूर्य 29/05/2017	मंगल 05/06/2017 राहु 25/06/2017 गुरु 12/07/2017 शनि 01/08/2017 बुध 19/08/2017 केतु 26/08/2017 शुक्र 17/09/2017 सूर्य 23/09/2017 चंद्र 04/10/2017
सूर्य - राहु 04/10/2017 29/08/2018	सूर्य - गुरु 29/08/2018 17/06/2019	सूर्य - शनि 17/06/2019 29/05/2020	सूर्य - बुध 29/05/2020 04/04/2021	सूर्य - केतु 04/04/2021 10/08/2021
राहु 22/11/2017 गुरु 05/01/2018 शनि 26/02/2018 बुध 14/04/2018 केतु 03/05/2018 शुक्र 27/06/2018 सूर्य 13/07/2018 चंद्र 09/08/2018 मंगल 29/08/2018	गुरु 06/10/2018 शनि 22/11/2018 बुध 02/01/2019 केतु 19/01/2019 शुक्र 09/03/2019 सूर्य 23/03/2019 चंद्र 17/04/2019 मंगल 04/05/2019 राहु 17/06/2019	शनि 11/08/2019 बुध 29/09/2019 केतु 19/10/2019 शुक्र 16/12/2019 सूर्य 02/01/2020 चंद्र 31/01/2020 मंगल 20/02/2020 राहु 12/04/2020 गुरु 29/05/2020	बुध 12/07/2020 केतु 30/07/2020 शुक्र 20/09/2020 सूर्य 05/10/2020 चंद्र 31/10/2020 मंगल 18/11/2020 राहु 04/01/2021 गुरु 14/02/2021 शनि 04/04/2021	केतु 12/04/2021 शुक्र 03/05/2021 सूर्य 09/05/2021 चंद्र 20/05/2021 मंगल 27/05/2021 राहु 16/06/2021 गुरु 03/07/2021 शनि 23/07/2021 बुध 10/08/2021
सूर्य - शुक्र 10/08/2021 10/08/2022	चंद्र - चंद्र 10/08/2022 11/06/2023	चंद्र - मंगल 11/06/2023 10/01/2024	चंद्र - राहु 10/01/2024 11/07/2025	चंद्र - गुरु 11/07/2025 10/11/2026
शुक्र 10/10/2021 सूर्य 28/10/2021 चंद्र 28/11/2021 मंगल 19/12/2021 राहु 12/02/2022 गुरु 01/04/2022 शनि 29/05/2022 बुध 20/07/2022 केतु 10/08/2022	चंद्र 05/09/2022 मंगल 22/09/2022 राहु 07/11/2022 गुरु 18/12/2022 शनि 04/02/2023 बुध 19/03/2023 केतु 06/04/2023 शुक्र 26/05/2023 सूर्य 11/06/2023	मंगल 23/06/2023 राहु 25/07/2023 गुरु 22/08/2023 शनि 25/09/2023 बुध 25/10/2023 केतु 07/11/2023 शुक्र 12/12/2023 सूर्य 23/12/2023 चंद्र 10/01/2024	राहु 01/04/2024 गुरु 13/06/2024 शनि 08/09/2024 बुध 24/11/2024 केतु 26/12/2024 शुक्र 28/03/2025 सूर्य 24/04/2025 चंद्र 09/06/2025 मंगल 11/07/2025	गुरु 14/09/2025 शनि 30/11/2025 बुध 07/02/2026 केतु 07/03/2026 शुक्र 27/05/2026 सूर्य 21/06/2026 चंद्र 31/07/2026 मंगल 29/08/2026 राहु 10/11/2026

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि 10/11/2026 10/06/2028	चंद्र - बुध 10/06/2028 09/11/2029	चंद्र - केतु 09/11/2029 10/06/2030	चंद्र - शुक्र 10/06/2030 09/02/2032	चंद्र - सूर्य 09/02/2032 10/08/2032
शनि 09/02/2027 बुध 02/05/2027 केतु 05/06/2027 शुक्र 09/09/2027 सूर्य 08/10/2027 चंद्र 25/11/2027 मंगल 29/12/2027 राहु 25/03/2028 गुरु 10/06/2028	बुध 22/08/2028 केतु 21/09/2028 शुक्र 17/12/2028 सूर्य 11/01/2029 चंद्र 24/02/2029 मंगल 26/03/2029 राहु 11/06/2029 गुरु 19/08/2029 शनि 09/11/2029	केतु 22/11/2029 शुक्र 27/12/2029 सूर्य 07/01/2030 चंद्र 25/01/2030 मंगल 06/02/2030 राहु 10/03/2030 गुरु 07/04/2030 शनि 11/05/2030 बुध 10/06/2030	शुक्र 20/09/2030 सूर्य 20/10/2030 चंद्र 10/12/2030 मंगल 15/01/2031 राहु 16/04/2031 गुरु 06/07/2031 शनि 10/10/2031 बुध 05/01/2032 केतु 09/02/2032	सूर्य 18/02/2032 चंद्र 04/03/2032 मंगल 15/03/2032 राहु 12/04/2032 गुरु 06/05/2032 शनि 04/06/2032 बुध 30/06/2032 केतु 10/07/2032 शुक्र 10/08/2032
मंगल - मंगल 10/08/2032 06/01/2033	मंगल - राहु 06/01/2033 24/01/2034	मंगल - गुरु 24/01/2034 31/12/2034	मंगल - शनि 31/12/2034 09/02/2036	मंगल - बुध 09/02/2036 05/02/2037
मंगल 18/08/2032 राहु 10/09/2032 गुरु 30/09/2032 शनि 23/10/2032 बुध 13/11/2032 केतु 22/11/2032 शुक्र 17/12/2032 सूर्य 24/12/2032 चंद्र 06/01/2033	राहु 04/03/2033 गुरु 25/04/2033 शनि 24/06/2033 बुध 18/08/2033 केतु 09/09/2033 शुक्र 12/11/2033 सूर्य 01/12/2033 चंद्र 02/01/2034 मंगल 24/01/2034	गुरु 11/03/2034 शनि 04/05/2034 बुध 21/06/2034 केतु 11/07/2034 शुक्र 06/09/2034 सूर्य 23/09/2034 चंद्र 21/10/2034 मंगल 10/11/2034 राहु 31/12/2034	शनि 05/03/2035 बुध 02/05/2035 केतु 25/05/2035 शुक्र 01/08/2035 सूर्य 21/08/2035 चंद्र 24/09/2035 मंगल 17/10/2035 राहु 17/12/2035 गुरु 09/02/2036	बुध 31/03/2036 केतु 22/04/2036 शुक्र 21/06/2036 सूर्य 09/07/2036 चंद्र 08/08/2036 मंगल 29/08/2036 राहु 23/10/2036 गुरु 10/12/2036 शनि 05/02/2037
मंगल - केतु 05/02/2037 04/07/2037	मंगल - शुक्र 04/07/2037 04/09/2038	मंगल - सूर्य 04/09/2038 09/01/2039	मंगल - चंद्र 09/01/2039 11/08/2039	राहु - राहु 11/08/2039 23/04/2042
केतु 14/02/2037 शुक्र 11/03/2037 सूर्य 18/03/2037 चंद्र 31/03/2037 मंगल 08/04/2037 राहु 01/05/2037 गुरु 21/05/2037 शनि 13/06/2037 बुध 04/07/2037	शुक्र 14/09/2037 सूर्य 05/10/2037 चंद्र 09/11/2037 मंगल 04/12/2037 राहु 06/02/2038 गुरु 04/04/2038 शनि 10/06/2038 बुध 10/08/2038 केतु 04/09/2038	सूर्य 10/09/2038 चंद्र 21/09/2038 मंगल 28/09/2038 राहु 17/10/2038 गुरु 03/11/2038 शनि 24/11/2038 बुध 12/12/2038 केतु 19/12/2038 शुक्र 09/01/2039	चंद्र 27/01/2039 मंगल 09/02/2039 राहु 13/03/2039 गुरु 10/04/2039 शनि 14/05/2039 बुध 13/06/2039 केतु 25/06/2039 शुक्र 31/07/2039 सूर्य 11/08/2039	राहु 05/01/2040 गुरु 16/05/2040 शनि 19/10/2040 बुध 08/03/2041 केतु 04/05/2041 शुक्र 16/10/2041 सूर्य 04/12/2041 चंद्र 24/02/2042 मंगल 23/04/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु 23/04/2042 15/09/2044	राहु - शनि 15/09/2044 23/07/2047	राहु - बुध 23/07/2047 09/02/2050	राहु - केतु 09/02/2050 27/02/2051	राहु - शुक्र 27/02/2051 27/02/2054
गुरु 18/08/2042 शनि 03/01/2043 बुध 08/05/2043 केतु 28/06/2043 शुक्र 21/11/2043 सूर्य 04/01/2044 चंद्र 17/03/2044 मंगल 07/05/2044 राहु 15/09/2044	शनि 27/02/2045 बुध 25/07/2045 केतु 23/09/2045 शुक्र 16/03/2046 सूर्य 07/05/2046 चंद्र 02/08/2046 मंगल 01/10/2046 राहु 06/03/2047 गुरु 23/07/2047	बुध 02/12/2047 केतु 26/01/2048 शुक्र 29/06/2048 सूर्य 14/08/2048 चंद्र 31/10/2048 मंगल 24/12/2048 राहु 13/05/2049 गुरु 14/09/2049 शनि 09/02/2050	केतु 03/03/2050 शुक्र 06/05/2050 सूर्य 25/05/2050 चंद्र 26/06/2050 मंगल 18/07/2050 राहु 14/09/2050 गुरु 04/11/2050 शनि 04/01/2051 बुध 27/02/2051	शुक्र 29/08/2051 सूर्य 23/10/2051 चंद्र 22/01/2052 मंगल 26/03/2052 राहु 06/09/2052 गुरु 30/01/2053 शनि 23/07/2053 बुध 25/12/2053 केतु 27/02/2054
राहु - सूर्य 27/02/2054 22/01/2055	राहु - चंद्र 22/01/2055 22/07/2056	राहु - मंगल 22/07/2056 10/08/2057	गुरु - गुरु 10/08/2057 28/09/2059	गुरु - शनि 28/09/2059 11/04/2062
सूर्य 15/03/2054 चंद्र 12/04/2054 मंगल 01/05/2054 राहु 19/06/2054 गुरु 02/08/2054 शनि 23/09/2054 बुध 09/11/2054 केतु 28/11/2054 शुक्र 22/01/2055	चंद्र 08/03/2055 मंगल 09/04/2055 राहु 30/06/2055 गुरु 11/09/2055 शनि 07/12/2055 बुध 23/02/2056 केतु 26/03/2056 शुक्र 25/06/2056 सूर्य 22/07/2056	मंगल 14/08/2056 राहु 10/10/2056 गुरु 01/12/2056 शनि 30/01/2057 बुध 26/03/2057 केतु 17/04/2057 शुक्र 20/06/2057 सूर्य 09/07/2057 चंद्र 10/08/2057	गुरु 22/11/2057 शनि 25/03/2058 बुध 14/07/2058 केतु 28/08/2058 शुक्र 05/01/2059 सूर्य 13/02/2059 चंद्र 19/04/2059 मंगल 03/06/2059 राहु 28/09/2059	शनि 22/02/2060 बुध 02/07/2060 केतु 25/08/2060 शुक्र 26/01/2061 सूर्य 13/03/2061 चंद्र 29/05/2061 मंगल 22/07/2061 राहु 08/12/2061 गुरु 11/04/2062
गुरु - बुध 11/04/2062 16/07/2064	गुरु - केतु 16/07/2064 22/06/2065	गुरु - शुक्र 22/06/2065 21/02/2068	गुरु - सूर्य 21/02/2068 10/12/2068	गुरु - चंद्र 10/12/2068 11/04/2070
बुध 06/08/2062 केतु 23/09/2062 शुक्र 08/02/2063 सूर्य 21/03/2063 चंद्र 29/05/2063 मंगल 17/07/2063 राहु 18/11/2063 गुरु 07/03/2064 शनि 16/07/2064	केतु 05/08/2064 शुक्र 01/10/2064 सूर्य 18/10/2064 चंद्र 16/11/2064 मंगल 05/12/2064 राहु 26/01/2065 गुरु 12/03/2065 शनि 05/05/2065 बुध 22/06/2065	शुक्र 02/12/2065 सूर्य 19/01/2066 चंद्र 11/04/2066 मंगल 06/06/2066 राहु 30/10/2066 गुरु 09/03/2067 शनि 11/08/2067 बुध 26/12/2067 केतु 21/02/2068	सूर्य 07/03/2068 चंद्र 31/03/2068 मंगल 17/04/2068 राहु 31/05/2068 गुरु 09/07/2068 शनि 24/08/2068 बुध 05/10/2068 केतु 22/10/2068 शुक्र 10/12/2068	चंद्र 19/01/2069 मंगल 17/02/2069 राहु 01/05/2069 गुरु 04/07/2069 शनि 20/09/2069 बुध 28/11/2069 केतु 26/12/2069 शुक्र 17/03/2070 सूर्य 11/04/2070

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल 11/04/2070 17/03/2071	गुरु - राहु 17/03/2071 10/08/2073	शनि - शनि 10/08/2073 13/08/2076	शनि - बुध 13/08/2076 23/04/2079	शनि - केतु 23/04/2079 01/06/2080
मंगल 30/04/2070 राहु 21/06/2070 गुरु 05/08/2070 शनि 28/09/2070 बुध 15/11/2070 केतु 05/12/2070 शुक्र 31/01/2071 सूर्य 17/02/2071 चंद्र 17/03/2071	राहु 27/07/2071 गुरु 21/11/2071 शनि 08/04/2072 बुध 10/08/2072 केतु 30/09/2072 शुक्र 23/02/2073 सूर्य 08/04/2073 चंद्र 20/06/2073 मंगल 10/08/2073	शनि 31/01/2074 बुध 06/07/2074 केतु 08/09/2074 शुक्र 10/03/2075 सूर्य 04/05/2075 चंद्र 03/08/2075 मंगल 06/10/2075 राहु 19/03/2076 गुरु 13/08/2076	बुध 30/12/2076 केतु 25/02/2077 शुक्र 08/08/2077 सूर्य 26/09/2077 चंद्र 17/12/2077 मंगल 13/02/2078 राहु 10/07/2078 गुरु 18/11/2078 शनि 23/04/2079	केतु 17/05/2079 शुक्र 23/07/2079 सूर्य 12/08/2079 चंद्र 15/09/2079 मंगल 09/10/2079 राहु 08/12/2079 गुरु 31/01/2080 शनि 04/04/2080 बुध 01/06/2080
शनि - शुक्र 01/06/2080 01/08/2083	शनि - सूर्य 01/08/2083 13/07/2084	शनि - चंद्र 13/07/2084 12/02/2086	शनि - मंगल 12/02/2086 23/03/2087	शनि - राहु 23/03/2087 27/01/2090
शुक्र 11/12/2080 सूर्य 06/02/2081 चंद्र 14/05/2081 मंगल 20/07/2081 राहु 10/01/2082 गुरु 13/06/2082 शनि 13/12/2082 बुध 26/05/2083 केतु 01/08/2083	सूर्य 19/08/2083 चंद्र 17/09/2083 मंगल 07/10/2083 राहु 28/11/2083 गुरु 13/01/2084 शनि 08/03/2084 बुध 26/04/2084 केतु 17/05/2084 शुक्र 13/07/2084	चंद्र 31/08/2084 मंगल 03/10/2084 राहु 29/12/2084 गुरु 16/03/2085 शनि 16/06/2085 बुध 06/09/2085 केतु 09/10/2085 शुक्र 14/01/2086 सूर्य 12/02/2086	मंगल 07/03/2086 राहु 07/05/2086 गुरु 30/06/2086 शनि 02/09/2086 बुध 29/10/2086 केतु 22/11/2086 शुक्र 29/01/2087 सूर्य 18/02/2087 चंद्र 23/03/2087	राहु 27/08/2087 गुरु 12/01/2088 शनि 25/06/2088 बुध 20/11/2088 केतु 19/01/2089 शुक्र 12/07/2089 सूर्य 02/09/2089 चंद्र 28/11/2089 मंगल 27/01/2090
शनि - गुरु 27/01/2090 10/08/2092	बुध - बुध 10/08/2092 06/01/2095	बुध - केतु 06/01/2095 04/01/2096	बुध - शुक्र 04/01/2096 03/11/2098	बुध - सूर्य 03/11/2098 10/09/2099
गुरु 31/05/2090 शनि 24/10/2090 बुध 04/03/2091 केतु 27/04/2091 शुक्र 29/09/2091 सूर्य 14/11/2091 चंद्र 30/01/2092 मंगल 24/03/2092 राहु 10/08/2092	बुध 12/12/2092 केतु 02/02/2093 शुक्र 28/06/2093 सूर्य 11/08/2093 चंद्र 24/10/2093 मंगल 14/12/2093 राहु 25/04/2094 गुरु 20/08/2094 शनि 06/01/2095	केतु 28/01/2095 शुक्र 29/03/2095 सूर्य 16/04/2095 चंद्र 16/05/2095 मंगल 06/06/2095 राहु 31/07/2095 गुरु 17/09/2095 शनि 13/11/2095 बुध 04/01/2096	शुक्र 24/06/2096 सूर्य 15/08/2096 चंद्र 09/11/2096 मंगल 08/01/2097 राहु 13/06/2097 गुरु 29/10/2097 शनि 11/04/2098 बुध 04/09/2098 केतु 03/11/2098	सूर्य 19/11/2098 चंद्र 15/12/2098 मंगल 02/01/2099 राहु 18/02/2099 गुरु 31/03/2099 शनि 19/05/2099 बुध 02/07/2099 केतु 20/07/2099 शुक्र 10/09/2099

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - गुरु - बुध		चंद्र - गुरु - केतु		चंद्र - गुरु - शुक्र		चंद्र - गुरु - सूर्य	
30/11/2025 02:43		07/02/2026 02:31		07/03/2026 12:19		27/05/2026 16:19	
07/02/2026 02:31		07/03/2026 12:19		27/05/2026 16:19		21/06/2026 00:43	
बुध	09/12/2025 21:17	केतु	08/02/2026 18:17	शुक्र	21/03/2026 00:59	सूर्य	28/05/2026 21:32
केतु	13/12/2025 21:52	शुक्र	13/02/2026 11:55	सूर्य	25/03/2026 02:23	चंद्र	30/05/2026 22:14
शुक्र	25/12/2025 09:50	सूर्य	14/02/2026 22:01	चंद्र	31/03/2026 20:43	मंगल	01/06/2026 08:19
सूर्य	28/12/2025 20:38	चंद्र	17/02/2026 06:50	मंगल	05/04/2026 14:21	राहु	04/06/2026 23:59
चंद्र	03/01/2026 14:37	मंगल	18/02/2026 22:36	राहु	17/04/2026 18:33	गुरु	08/06/2026 05:54
मंगल	07/01/2026 15:12	राहु	23/02/2026 04:52	गुरु	28/04/2026 14:17	शनि	12/06/2026 02:26
राहु	17/01/2026 23:34	गुरु	26/02/2026 23:46	शनि	11/05/2026 10:43	बुध	15/06/2026 13:13
गुरु	27/01/2026 04:21	शनि	03/03/2026 11:44	बुध	22/05/2026 22:41	केतु	16/06/2026 23:19
शनि	07/02/2026 02:31	बुध	07/03/2026 12:19	केतु	27/05/2026 16:19	शुक्र	21/06/2026 00:43
चंद्र - गुरु - चंद्र		चंद्र - गुरु - मंगल		चंद्र - गुरु - राहु		चंद्र - शनि - शनि	
21/06/2026 00:43		31/07/2026 14:43		29/08/2026 00:31		10/11/2026 01:43	
31/07/2026 14:43		29/08/2026 00:31		10/11/2026 01:43		09/02/2027 15:18	
चंद्र	24/06/2026 09:53	मंगल	02/08/2026 06:29	राहु	08/09/2026 23:30	शनि	24/11/2026 13:40
मंगल	26/06/2026 18:42	राहु	06/08/2026 12:45	गुरु	18/09/2026 17:15	बुध	07/12/2026 12:59
राहु	02/07/2026 20:48	गुरु	10/08/2026 07:40	शनि	30/09/2026 06:51	केतु	12/12/2026 21:11
गुरु	08/07/2026 06:40	शनि	14/08/2026 19:37	बुध	10/10/2026 15:13	शुक्र	28/12/2026 03:27
शनि	14/07/2026 16:53	बुध	18/08/2026 20:12	केतु	14/10/2026 21:29	सूर्य	01/01/2027 17:20
बुध	20/07/2026 10:52	केतु	20/08/2026 11:58	शुक्र	27/10/2026 01:41	चंद्र	09/01/2027 08:28
केतु	22/07/2026 19:41	शुक्र	25/08/2026 05:36	सूर्य	30/10/2026 17:21	मंगल	14/01/2027 16:39
शुक्र	29/07/2026 14:01	सूर्य	26/08/2026 15:42	चंद्र	05/11/2026 19:27	राहु	28/01/2027 10:17
सूर्य	31/07/2026 14:43	चंद्र	29/08/2026 00:31	मंगल	10/11/2026 01:43	गुरु	09/02/2027 15:18
चंद्र - शनि - बुध		चंद्र - शनि - केतु		चंद्र - शनि - शुक्र		चंद्र - शनि - सूर्य	
09/02/2027 15:18		02/05/2027 13:34		05/06/2027 07:12		09/09/2027 16:27	
02/05/2027 13:34		05/06/2027 07:12		09/09/2027 16:27		08/10/2027 14:26	
बुध	21/02/2027 05:51	केतु	04/05/2027 12:48	शुक्र	21/06/2027 08:45	सूर्य	11/09/2027 03:09
केतु	26/02/2027 00:33	शुक्र	10/05/2027 03:44	सूर्य	26/06/2027 04:24	चंद्र	13/09/2027 12:59
शुक्र	11/03/2027 16:16	सूर्य	11/05/2027 20:13	चंद्र	04/07/2027 05:11	मंगल	15/09/2027 05:28
सूर्य	15/03/2027 18:35	चंद्र	14/05/2027 15:41	मंगल	09/07/2027 20:07	राहु	19/09/2027 13:34
चंद्र	22/03/2027 14:26	मंगल	16/05/2027 14:55	राहु	24/07/2027 07:06	गुरु	23/09/2027 10:05
मंगल	27/03/2027 09:08	राहु	21/05/2027 16:21	गुरु	06/08/2027 03:32	शनि	27/09/2027 23:58
राहु	08/04/2027 16:04	गुरु	26/05/2027 04:19	शनि	21/08/2027 09:48	बुध	02/10/2027 02:17
गुरु	19/04/2027 14:14	शनि	31/05/2027 12:30	बुध	04/09/2027 01:31	केतु	03/10/2027 18:46
शनि	02/05/2027 13:34	बुध	05/06/2027 07:12	केतु	09/09/2027 16:27	शुक्र	08/10/2027 14:26

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शनि - चंद्र		चंद्र - शनि - मंगल		चंद्र - शनि - राहु		चंद्र - शनि - गुरु	
08/10/2027 14:26		25/11/2027 19:03		29/12/2027 12:41		25/03/2028 06:37	
25/11/2027 19:03		29/12/2027 12:41		25/03/2028 06:37		10/06/2028 09:13	
चंद्र	12/10/2027 14:49	मंगल	27/11/2027 18:17	राहु	11/01/2028 12:59	गुरु	04/04/2028 13:22
मंगल	15/10/2027 10:17	राहु	02/12/2027 19:44	गुरु	23/01/2028 02:34	शनि	16/04/2028 18:22
राहु	22/10/2027 15:47	गुरु	07/12/2027 07:41	शनि	05/02/2028 20:12	बुध	27/04/2028 16:32
गुरु	29/10/2027 02:00	शनि	12/12/2027 15:52	बुध	18/02/2028 03:09	केतु	02/05/2028 04:30
शनि	05/11/2027 17:07	बुध	17/12/2027 10:34	केतु	23/02/2028 04:35	शुक्र	15/05/2028 00:56
बुध	12/11/2027 12:59	केतु	19/12/2027 09:48	शुक्र	08/03/2028 15:35	सूर्य	18/05/2028 21:27
केतु	15/11/2027 08:27	शुक्र	25/12/2027 00:44	सूर्य	12/03/2028 23:40	चंद्र	25/05/2028 07:40
शुक्र	23/11/2027 09:13	सूर्य	26/12/2027 17:13	चंद्र	20/03/2028 05:10	मंगल	29/05/2028 19:37
सूर्य	25/11/2027 19:03	चंद्र	29/12/2027 12:41	मंगल	25/03/2028 06:37	राहु	10/06/2028 09:13
चंद्र - बुध - बुध		चंद्र - बुध - केतु		चंद्र - बुध - शुक्र		चंद्र - बुध - सूर्य	
10/06/2028 09:13		22/08/2028 16:30		21/09/2028 20:55		17/12/2028 02:40	
22/08/2028 16:30		21/09/2028 20:55		17/12/2028 02:40		11/01/2029 23:35	
बुध	20/06/2028 18:27	केतु	24/08/2028 10:46	शुक्र	06/10/2028 05:52	सूर्य	18/12/2028 09:43
केतु	25/06/2028 01:04	शुक्र	29/08/2028 11:30	सूर्य	10/10/2028 13:22	चंद्र	20/12/2028 13:27
शुक्र	07/07/2028 06:17	सूर्य	30/08/2028 23:43	चंद्र	17/10/2028 17:50	मंगल	22/12/2028 01:40
सूर्य	10/07/2028 22:15	चंद्र	02/09/2028 12:05	मंगल	22/10/2028 18:34	राहु	25/12/2028 22:49
चंद्र	17/07/2028 00:51	मंगल	04/09/2028 06:20	राहु	04/11/2028 17:02	गुरु	29/12/2028 09:36
मंगल	21/07/2028 07:29	राहु	08/09/2028 19:00	गुरु	16/11/2028 05:00	शनि	02/01/2029 11:55
राहु	01/08/2028 07:23	गुरु	12/09/2028 19:35	शनि	29/11/2028 20:43	बुध	06/01/2029 03:53
गुरु	11/08/2028 01:57	शनि	17/09/2028 14:17	बुध	12/12/2028 01:56	केतु	07/01/2029 16:06
शनि	22/08/2028 16:30	बुध	21/09/2028 20:55	केतु	17/12/2028 02:40	शुक्र	11/01/2029 23:35
चंद्र - बुध - चंद्र		चंद्र - बुध - मंगल		चंद्र - बुध - राहु		चंद्र - बुध - गुरु	
11/01/2029 23:35		24/02/2029 02:28		26/03/2029 06:53		11/06/2029 21:39	
24/02/2029 02:28		26/03/2029 06:53		11/06/2029 21:39		19/08/2029 21:27	
चंद्र	15/01/2029 13:50	मंगल	25/02/2029 20:43	राहु	06/04/2029 22:18	गुरु	21/06/2029 02:25
मंगल	18/01/2029 02:12	राहु	02/03/2029 09:23	गुरु	17/04/2029 06:40	शनि	02/07/2029 00:36
राहु	24/01/2029 13:26	गुरु	06/03/2029 09:58	शनि	29/04/2029 13:36	बुध	11/07/2029 19:10
गुरु	30/01/2029 07:25	शनि	11/03/2029 04:40	बुध	10/05/2029 13:30	केतु	15/07/2029 19:45
शनि	06/02/2029 03:16	बुध	15/03/2029 11:18	केतु	15/05/2029 02:09	शुक्र	27/07/2029 07:43
बुध	12/02/2029 05:52	केतु	17/03/2029 05:33	शुक्र	28/05/2029 00:37	सूर्य	30/07/2029 18:31
केतु	14/02/2029 18:14	शुक्र	22/03/2029 06:17	सूर्य	31/05/2029 21:45	चंद्र	05/08/2029 12:30
शुक्र	21/02/2029 22:43	सूर्य	23/03/2029 18:31	चंद्र	07/06/2029 08:59	मंगल	09/08/2029 13:05
सूर्य	24/02/2029 02:28	चंद्र	26/03/2029 06:53	मंगल	11/06/2029 21:39	राहु	19/08/2029 21:27

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 4 वर्ष 11 मास 18 दिन

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
23/10/1990	12/10/1995	12/10/2002	12/10/2010	12/10/2011
12/10/1995	12/10/2002	12/10/2010	12/10/2011	12/10/2013
23/10/1990	सिद्ध 20/02/1997	संक 22/07/2004	मंग 22/10/2010	पिंग 22/11/2011
सिद्ध 12/12/1991	संक 12/09/1998	मंग 12/10/2004	पिंग 11/11/2010	धांय 22/01/2012
संक 12/04/1993	मंग 22/11/1998	पिंग 23/03/2005	धांय 12/12/2010	भ्राम 12/04/2012
मंग 12/06/1993	पिंग 13/04/1999	धांय 21/11/2005	भ्राम 21/01/2011	भद्रि 22/07/2012
पिंग 12/10/1993	धांय 12/11/1999	भ्राम 12/10/2006	भद्रि 13/03/2011	उल्क 21/11/2012
धांय 12/04/1994	भ्राम 22/08/2000	भद्रि 22/11/2007	उल्क 13/05/2011	सिद्ध 12/04/2013
भ्राम 12/12/1994	भद्रि 12/08/2001	उल्क 23/03/2009	सिद्ध 23/07/2011	संक 21/09/2013
भद्रि 12/10/1995	उल्क 12/10/2002	सिद्ध 12/10/2010	संक 12/10/2011	मंग 12/10/2013

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
12/10/2013	12/10/2016	12/10/2020	12/10/2025	12/10/2031
12/10/2016	12/10/2020	12/10/2025	12/10/2031	12/10/2038
धांय 11/01/2014	भ्राम 23/03/2017	भद्रि 22/06/2021	उल्क 12/10/2026	सिद्ध 20/02/2033
भ्राम 13/05/2014	भद्रि 12/10/2017	उल्क 23/04/2022	सिद्ध 12/12/2027	संक 12/09/2034
भद्रि 12/10/2014	उल्क 12/06/2018	सिद्ध 13/04/2023	संक 12/04/2029	मंग 22/11/2034
उल्क 13/04/2015	सिद्ध 23/03/2019	संक 22/05/2024	मंग 12/06/2029	पिंग 13/04/2035
सिद्ध 12/11/2015	संक 11/02/2020	मंग 12/07/2024	पिंग 12/10/2029	धांय 12/11/2035
संक 12/07/2016	मंग 23/03/2020	पिंग 22/10/2024	धांय 12/04/2030	भ्राम 22/08/2036
मंग 12/08/2016	पिंग 12/06/2020	धांय 23/03/2025	भ्राम 12/12/2030	भद्रि 12/08/2037
पिंग 12/10/2016	धांय 12/10/2020	भ्राम 12/10/2025	भद्रि 12/10/2031	उल्क 12/10/2038

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
12/10/2038	12/10/2046	12/10/2047	12/10/2049	12/10/2052
12/10/2046	12/10/2047	12/10/2049	12/10/2052	12/10/2056
संक 22/07/2040	मंग 22/10/2046	पिंग 22/11/2047	धांय 11/01/2050	भाम 23/03/2053
मंग 12/10/2040	पिंग 11/11/2046	धांय 22/01/2048	भाम 13/05/2050	भद्रि 12/10/2053
पिंग 23/03/2041	धांय 12/12/2046	भाम 12/04/2048	भद्रि 12/10/2050	उल्क 12/06/2054
धांय 21/11/2041	भाम 21/01/2047	भद्रि 22/07/2048	उल्क 13/04/2051	सिद्ध 23/03/2055
भाम 12/10/2042	भद्रि 13/03/2047	उल्क 21/11/2048	सिद्ध 12/11/2051	संक 11/02/2056
भद्रि 22/11/2043	उल्क 13/05/2047	सिद्ध 12/04/2049	संक 12/07/2052	मंग 23/03/2056
उल्क 23/03/2045	सिद्ध 23/07/2047	संक 21/09/2049	मंग 12/08/2052	पिंग 12/06/2056
सिद्ध 12/10/2046	संक 12/10/2047	मंग 12/10/2049	पिंग 12/10/2052	धांय 12/10/2056
भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
12/10/2056	12/10/2061	12/10/2067	12/10/2074	12/10/2082
12/10/2061	12/10/2067	12/10/2074	12/10/2082	12/10/2083
भद्रि 22/06/2057	उल्क 12/10/2062	सिद्ध 20/02/2069	संक 22/07/2076	मंग 22/10/2082
उल्क 23/04/2058	सिद्ध 12/12/2063	संक 12/09/2070	मंग 12/10/2076	पिंग 11/11/2082
सिद्ध 13/04/2059	संक 12/04/2065	मंग 22/11/2070	पिंग 23/03/2077	धांय 12/12/2082
संक 22/05/2060	मंग 12/06/2065	पिंग 13/04/2071	धांय 21/11/2077	भाम 21/01/2083
मंग 12/07/2060	पिंग 12/10/2065	धांय 12/11/2071	भाम 12/10/2078	भद्रि 13/03/2083
पिंग 22/10/2060	धांय 12/04/2066	भाम 22/08/2072	भद्रि 22/11/2079	उल्क 13/05/2083
धांय 23/03/2061	भाम 12/12/2066	भद्रि 12/08/2073	उल्क 23/03/2081	सिद्ध 23/07/2083
भाम 12/10/2061	भद्रि 12/10/2067	उल्क 12/10/2074	सिद्ध 12/10/2082	संक 12/10/2083
पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
12/10/2083	12/10/2085	12/10/2088	12/10/2092	12/10/2097
12/10/2085	12/10/2088	12/10/2092	12/10/2097	00/00/0000
पिंग 22/11/2083	धांय 11/01/2086	भाम 23/03/2089	भद्रि 22/06/2093	उल्क 12/10/2098
धांय 22/01/2084	भाम 13/05/2086	भद्रि 12/10/2089	उल्क 23/04/2094	सिद्ध 23/10/2098
भाम 12/04/2084	भद्रि 12/10/2086	उल्क 12/06/2090	सिद्ध 13/04/2095	00/00/0000
भद्रि 22/07/2084	उल्क 13/04/2087	सिद्ध 23/03/2091	संक 22/05/2096	00/00/0000
उल्क 21/11/2084	सिद्ध 12/11/2087	संक 11/02/2092	मंग 12/07/2096	00/00/0000
सिद्ध 12/04/2085	संक 12/07/2088	मंग 23/03/2092	पिंग 22/10/2096	00/00/0000
संक 21/09/2085	मंग 12/08/2088	पिंग 12/06/2092	धांय 23/03/2097	00/00/0000
मंग 12/10/2085	पिंग 12/10/2088	धांय 12/10/2092	भाम 12/10/2097	00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

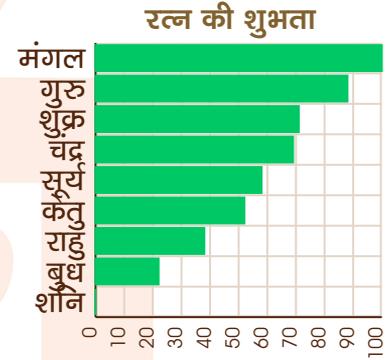
मूलांक	5
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 9, 7
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	88%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	71%	सुख, धनार्जन
मोती	चंद्र	69%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	58%	सुख, धन
लहसुनिया	केतु	52%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	38%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	22%	ग्रह कलेश, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	10/08/1996	41%	56%	100%	22%	88%	77%	0%	12%	64%
शुक्र	10/08/2016	41%	56%	100%	34%	88%	83%	0%	50%	58%
सूर्य	10/08/2022	70%	75%	100%	22%	94%	58%	0%	12%	28%
चंद्र	10/08/2032	64%	81%	100%	34%	88%	71%	0%	12%	28%
मंगल	11/08/2039	64%	75%	100%	0%	94%	71%	0%	12%	58%
राहु	10/08/2057	41%	56%	88%	22%	88%	77%	0%	56%	28%
गुरु	10/08/2073	64%	75%	100%	0%	100%	58%	0%	38%	52%
शनि	10/08/2092	41%	56%	88%	34%	88%	77%	0%	50%	28%
बुध	11/08/2109	64%	56%	100%	47%	88%	77%	0%	38%	52%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए हीरा, मोती, माणिक्य एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी

दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यों से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वाकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गोहं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न

आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते हैं। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते हैं। आपके कार्यों में जो बाधाएं आती हैं वो रत्न शुभता से दूर हो सकती हैं। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर 8 रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनों से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और

रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको नौकरी में स्थिरता प्रदान करेगा। मोती रत्न से आपके अपने मामा-मौसी से संबंध मधुर होंगे। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियों से राहत मिलेगी। आप अपने शत्रुओं की पहचान सरलता से कर पायेंगे। चंद्र रत्न मोती ऋण विषयों का समाधान करेगा। मोती रत्न शुभ होकर आपको उन्नति और सफलता देगा। आपको कोई बड़ा पद प्राप्त हो सकता है। मोती रत्न चंद्र ग्रह को शुभता प्रदान करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते हैं। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपकी सुख-समृद्धि को बढ़ायेगा। इस रत्न को धारण कर आप धन दौलत से परिपूर्ण होंगे। यह रत्न आपको शीघ्र ही लोकप्रियता देगा। पिता से संबंध मजबूत करेगा। भाईयों व बंधुओं के स्नेह का पात्र बनेंगे। प्रवास में अधिक रहना पड़ सकता है। मित्रवर्ग में सूर्य रत्न माणिक्य आपको विशेष अधिकार दिला सकता है। सूर्य रत्न आपको माणिक्य ऊंच पदवी, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मानजनक स्थिति देगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्ची, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई- बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम 9 माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको

शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार हृदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन-यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद पहनने पर आपको अपना व्यापार करने पर हानि की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको अपने कार्यों के अनुकूल सहायता प्राप्त नहीं हो पाएगी। यह रत्न आपको स्वभाव से क्रोधी और अहंकारी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप अपनी सफलता से असंतुष्ट हो सकते हैं। आपका स्वभाव कुछ हद तक उग्र हो सकता है। रत्न की शुभता आपके साथ न होने के कारण आपकी संगति और संबंध अयोग्य व्यक्तियों के साथ हो सकती है। दुष्ट व्यक्तियों के द्वारा आपको धन हानि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी धार्मिक आस्था में कमी कर सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि छेदे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। इस रत्न से आपकी वाद-वाद की योग्यता प्रभावित हो सकती है। यह आपके धैर्य और ज्ञान में कमी करेगा। आपके अपने बंधु बांधवों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। स्मरण शक्ति आपके काम नहीं आएगी। रत्न प्रभाव से आप कुसंगति के प्रभाव में आ सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आराम और विलासिता में पडकर आप अपने लक्ष्य को भूल सकते हैं। समाज में सम्मान की कमी हो सकती है। गणित जैसे विषय शिक्षा में आपकी परेशानियां बढ़ा सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते हैं। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते हैं। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते हैं। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते हैं। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते हैं। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते हैं। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(10/08/2022 - 10/08/2032)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(10/08/2032 - 11/08/2039)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(11/08/2039 - 10/08/2057)

राहु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/08/2057 - 10/08/2073)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/08/2073 - 10/08/2092)

शनि की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/08/2092 - 11/08/2109)

बुध की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपर्युक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

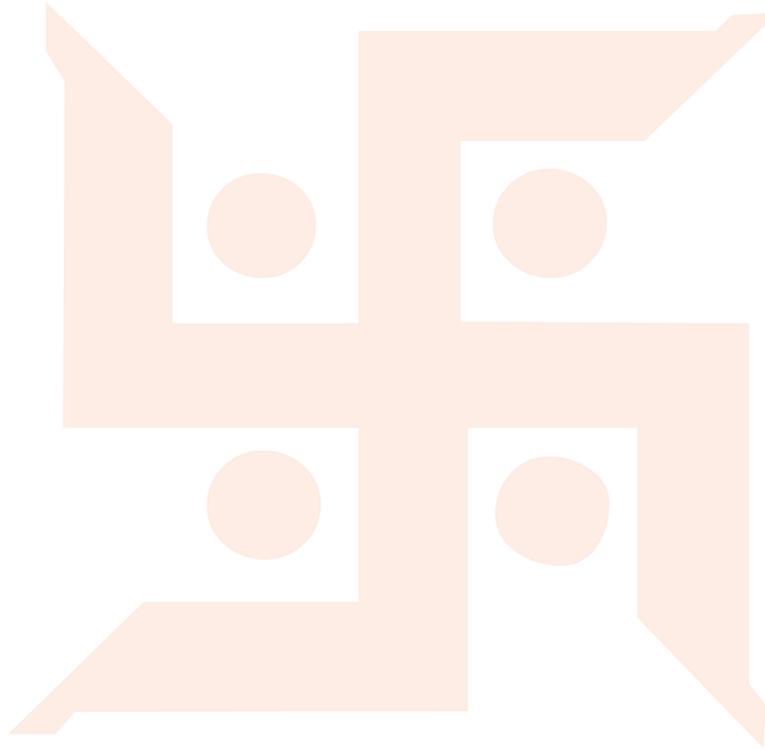
मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ॐ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है, और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टों में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते हैं, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता है। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यही कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते हैं। जिसमें छटा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं से कष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता है। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ठ भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव है। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढ़ाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्ठेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता है। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती है, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्टम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता है।

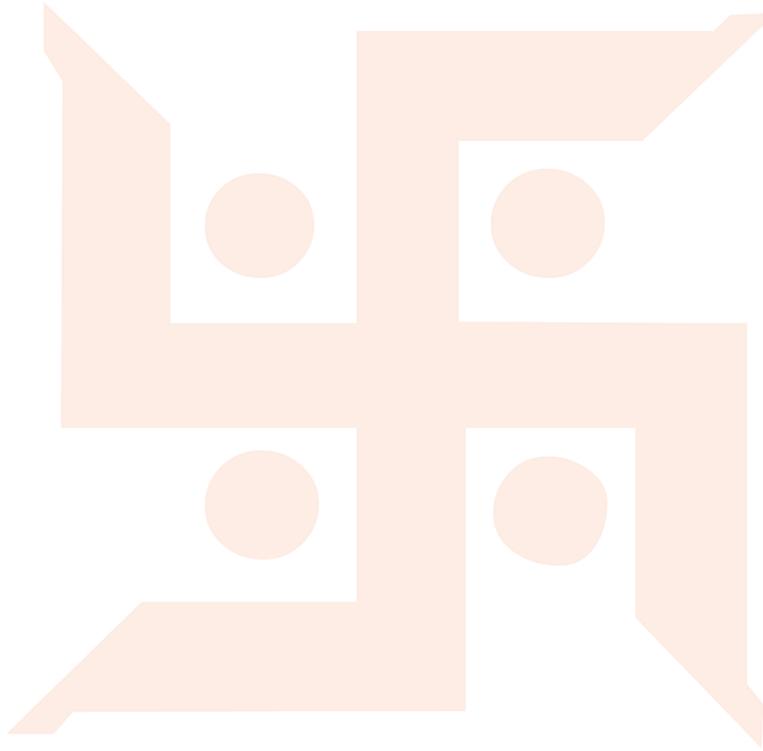
द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/10/1990-15/12/1990	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
सम

क्षेत्र

शत्रु व रोग
दम्पति
भाग्योदय
बुरा स्वास्थ्य
सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

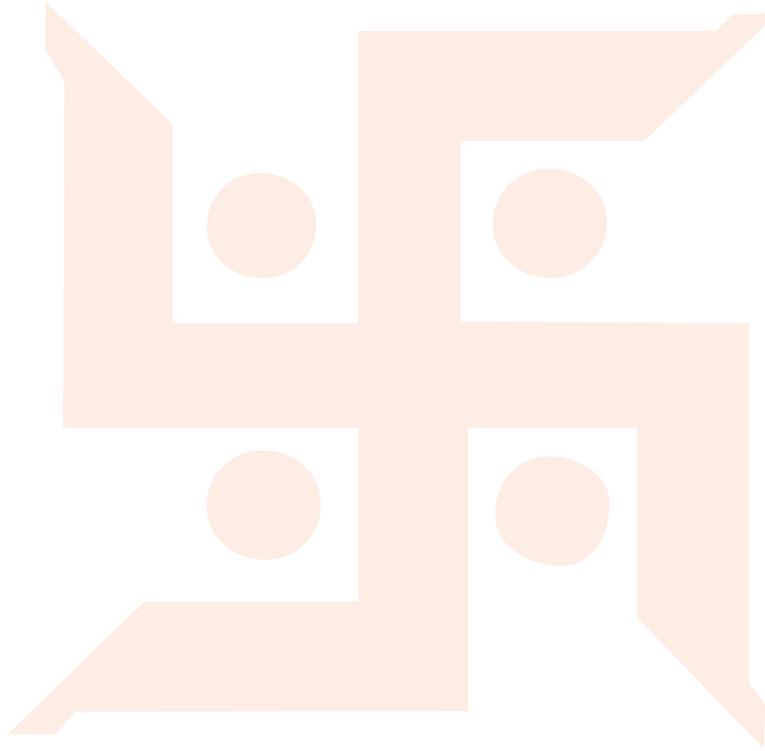
**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 23 है। दो एवं तीन के योग से आपका मूलांक 5 होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह को माना गया है। अंक दो का स्वामी चन्द्र तथा अंक तीन का गुरु है। अतः आपके जीवन पर मूलांक स्वामी बुध अंक स्वामी चन्द्र तथा गुरु तीनों का सम्मिलित प्रभाव दर्शनीय होगा।

मूलांक पाँच के प्रभाव से आपकी रुचि नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक रहेगी। बुध वाणिज्य का दाता है। यदि नौकरी भी करेंगे तो कॉमर्शियल विभाग, वित्त प्रधान कार्यों में रुचि रखेंगे। आप प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से समाप्त करेंगे। रोजगार का चुनाव आप ऐसा ही करेंगे जहाँ कार्य शीघ्रता से एवं कम मेहनत करने पर अधिक लाभ प्राप्त होता हो। मानसिक स्थिति चंचल होने से क्रोध आपको जल्दी आयेगा, लेकिन उसी गति से शान्त हो जायेगा। बुद्धि का अधिक प्रयोग करने के कारण वृद्धावस्था में आपको स्नायुवेग के रोगों की संभावना रहेगी। चन्द्र प्रभाव से शीतरोग एवं गुरु प्रभाव से पीलिया जैसे उदर रोगों का सामना करना पड़ेगा।

चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी। बौद्धिक स्तर उच्च होगा। समाज में घुल-मिल जाने की कला में आप निपुण रहेंगे। सामाजिक ख्याति आपकी उच्चकोटि की रहेगी एवं मुखिया इत्यादि का सामाजिक पद विभिन्न क्षेत्रों में मिलेगा। आपको अपनी मानसिक चंचलता पर नियंत्रण रखना भविष्य के लिये लाभ दायक रहेगा।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी-कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 7 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा मूलांक 5 और भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक या भाग्यांक का मिलाजुला फल प्राप्त होगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी व्यावसायिक कल्पना शक्ति अच्छी होगी एवं आप अपने रोजगार में एक सफल व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आप अधिक मात्रा में धन संग्रह करने में असमर्थ रहेंगे। आपका अधिक समय धनार्जन की अपेक्षा जनता की भलाई करने में व्यतीत होगा। जीवन में आप एक संघर्षशील, कर्मठ व्यक्ति के रूप में अपनी छवि स्थापित करेंगे। आपका सामाजिक स्तर काफी अच्छा रहेगा एवं दूर-दूर के लोगों से आपके संबंध बनेंगे। आपके

जीवन में यात्रा योग काफी अधिक रहेगा तथा यात्राओं से आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। कई यात्राएं आपके जीवन में अविस्मरणीय छाप छोड़ जाएंगी। आपका कार्यक्षेत्र परिवर्तनशील रहेगा एवं पुरानी प्रथाओं को नये रूप में पेश करने में आप सफल रहेंगे। आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 43 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 5, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, मई, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंकों से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

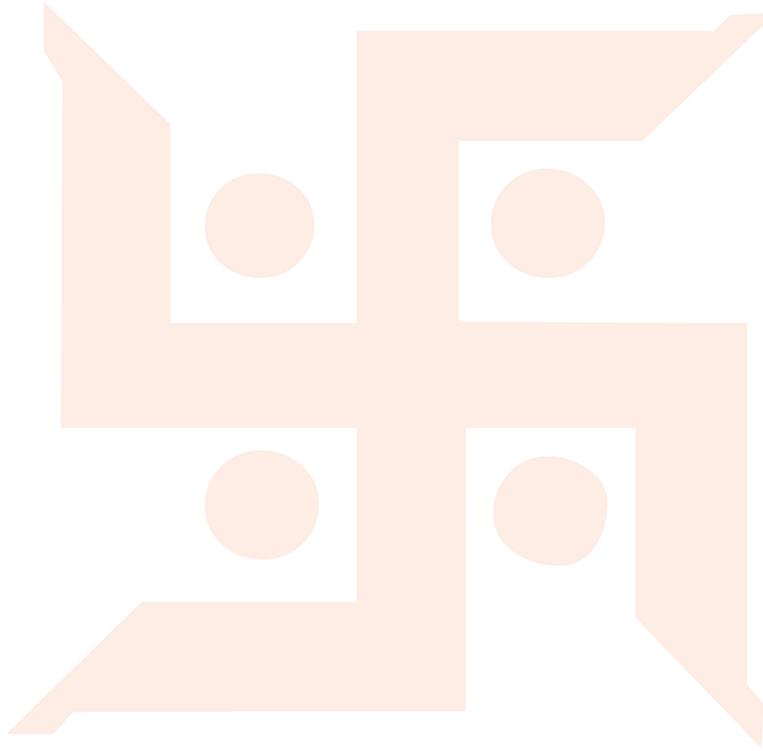
मूलांक 5 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 5, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 5, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
- 3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
- 5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
- 6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
- 7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
- 9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।



ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आधिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी, स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल,

विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीडित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त प्रवृत्ति से युक्त होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इनकी प्रवृत्ति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह के क्षेत्र में ये निश्चल होते हैं। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को ये परिश्रम तथा पराक्रम से अर्जित करके आनंदपूर्वक इसका उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। समाज एवं देश के कल्याणकारी कार्यों में ये अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। अन्य जनों की आंतरिक भावना को ये शीघ्र ही समझकर अपनी बुद्धिमता एवं चतुराई का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में किसी सम्मानित पद को अर्जित करके समाज में यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा आपके कार्यकलापों पर बुद्धिमता की स्पष्टछाप मिलेगी। इससे आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश भी प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा।

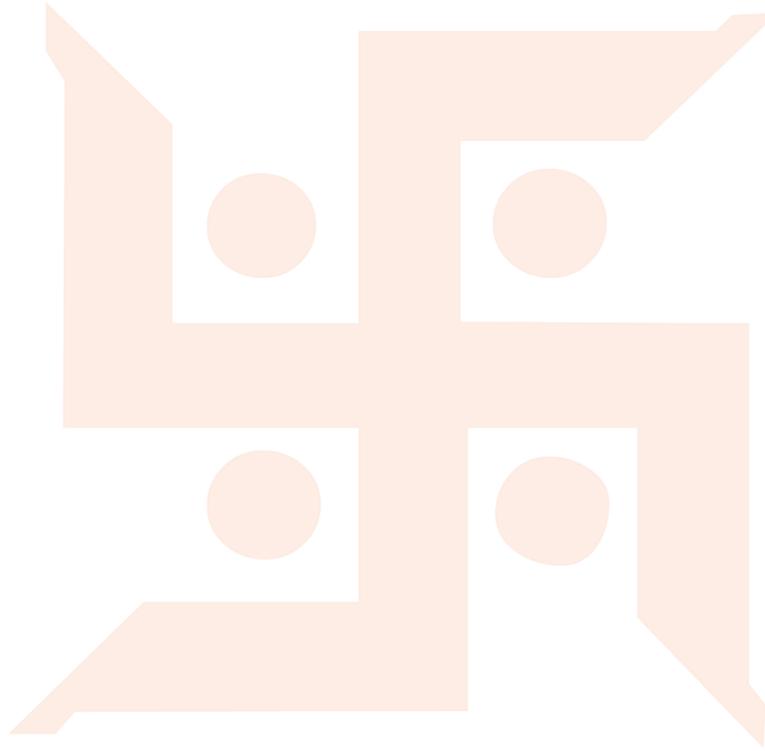
जीवन में यद्यपि आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा परन्तु परिश्रम पराक्रम एवं साहस से आप परिस्थितियों का सामना करेंगे तथा उन पर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे। आपको भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी तथा आनंदपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

केतु की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा इनमें सफलता भी प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे। सुखसंसाधनों को अर्जित करने की आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनको अर्जित करने में सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे लेकिन यदा कदा स्वभाव से आप उग्रता का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। अतः क्रोध आदि पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए। आप एक कर्तव्यपरायण व्यक्ति होंगे तथा समाज, कार्यक्षेत्र या देश के प्रति आप अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। आप अपने विषय के विद्वान होंगे तथा संगीत या कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आप सुख सहयोग एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों को आप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करने में सफल होंगे। आपके कर्म उत्कृष्ट रहेंगे तथा अपने श्रेष्ठ कार्यों से समाज तथा कार्य क्षेत्र में यश एवं आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार आप एक पराक्रमी, तेजस्वी, साहसी तथा परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकांश समय शान्त रहना ही आपको रुचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पसन्द करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पत्ति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्कों से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृत्ति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यों को करने में प्रवृत्त रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे परन्तु आयु के साथ-साथ आपसी संबंधों में तनाव भी हो सकता है। आप अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथायोग्य आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे वक्ता होंगे तथा भाषा पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा।

संचार की सुख सुविधाओं यथा वाहन, दूरभाष तथा दूरदर्शन आदि उपकरणों से सम्पन्न रहेंगे। आप संगीत के प्रिय होंगे एवं कला के प्रति भी आपकी रुचिशीलता रहेगी। आपका कंठ मधुर रहेगा जिससे अन्य जनों को अपने गायन से आकर्षित कर सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम आप अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे उसके बाद ही संगीत आदि कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप समय समय पर यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको भविष्य में इच्छित लाभ होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। आपकी पड़ोसी देशों की यात्राएं भी हो सकती हैं। इसके साथ ही पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध रखना पसन्द करेंगे। नीति के आप ज्ञाता होंगे अतः आम चुनाव लेख लिखने या पुस्तक आदि प्रकाशन से भी आप ख्याति तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या के ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव तथा मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक वृत्ति के पुरुष होंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा शुक्र भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। आप एक ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका यथोचित स्तर बना रहेगा।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। चतुर्थ भावस्थ शुक्र के प्रभाव से विवाह के बाद आपकी धन सम्पत्ति में वृद्धि होगी तथा पत्नी के सहयोग एवं प्रभाव से प्रचुर मात्रा में धन एवं सम्पत्ति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ एवं वृद्धि के योग बनते हैं। अतः यदि आप उपयुक्त जगह पूंजीनिवेश करें तो शीघ्र लाभान्वित हो सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर विशाल सुन्दर एवं आकर्षक होगा। आप भी इसकी सुन्दरता बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत रूप से रुचिशील होंगे। आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके घर तथा वाहन एक से अधिक हो सकते हैं।

आपकी माताजी सुन्दर सुशिक्षित बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा सुन्दरता की वह प्रिय होगी। वह स्वभाव से भी शांत एवं मृदु होंगी तथा पारिवारिक जनों के प्रति वह अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी एवं पारिवारिक जन भी उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे।

चतुर्थ भाव में स्वगृही शुक्र के प्रभाव से विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी प्रबल रुचि होगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में शिक्षा के प्रति उत्साह बना रहेगा एवं स्नातक परीक्षा भी आप अच्छे अंको से अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। अतः आप दुगुने उत्साह से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित करके उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रुचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विद्वान के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप की काफी रुचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त ही भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको संतति प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृत्ति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे लेकिन माता-पिता की आज्ञा का पालन वे अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा अपनी मर्जी के कार्य ही अधिक करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे आपकी सेवा में व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाहिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा वृद्धावस्था के लिए अपने लिए यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगी। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगे लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगे परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृत्ति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृत्ति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा शत्रुता के भाव की हमेशा उपेक्षा करेंगे। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं परन्तु आपके शत्रु इसमें बाधाएं उत्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही वे आपके सम्मान को हानि तथा सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करेंगे। इसे रोकने के लिए आप समयानुसार कोर्ट या मुकद्दमे आदि का सहारा ले सकते हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रुपक्ष का सामना करेंगे तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस कार्य में आपकी बुद्धिमत्ता तथा आपके सद्मित्रों का मंडल भी आपको सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा पारिवारिक या बन्धुवर्ग से भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च नैतिकता का अनुपालन करेंगे अतः शत्रुपक्ष को पराजित करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में सक्रियता से कार्यरत होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएं।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी होगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा इससे आपकी महानता में वृद्धि होगी। जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आएंगे जब आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि इनसे जीवन में आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता रहेगी तथा वे आपको कम ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा आपको मुकद्दमे आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में इसमें विजय प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप समाज में एक माननीय पुरुष होंगे तथा अपने अच्छे संबंधों से आपको सभी लोगों से यथोचित सहयोग एवं सम्मान मिलता रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में मकर राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति तथा धनवान होता है। राहु के प्रभाव से वह तेजस्वी पराक्रमी एवं साहसी भी होता है एवं आधुनिकता के प्रति भी उसके मन में आकर्षण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा चंचलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी तथा उनसे सभी लोग प्रभावित होंगे। आधुनिकता के प्रति भी उनका आकर्षण रहेगा एवं पाश्चत्य साहित्य एवं संस्कृति का अनुपालन करने के लिए प्रवृत्त होंगी। राहु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी ऊंचा होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा। सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करेंगी लेकिन शरीर में स्थूलता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति भी आकर्षण बना रहेगा।

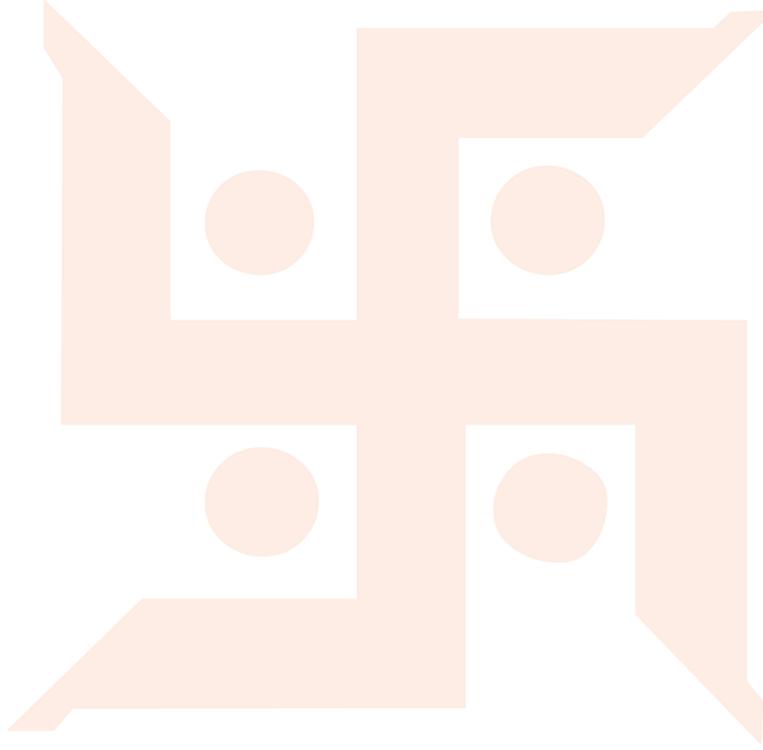
सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपका विवाह विलम्ब से होगा तथा विवाह पूर्व भी आपको किंचित परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपका विवाह किसी वयोवृद्ध संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा या राहु के प्रभाव से आप प्रेम विवाह या अंतर्जातीय विवाह भी स्वेच्छा से कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं आपस में एक दूसरे प्रति प्रेम तथा आकर्षण होगा परन्तु यदा कदा उनकी तेजस्वी वृत्ति से आपकी परेशानी हो सकती है लेकिन बुद्धिमता से सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आपका विवाह सामान्य परिवार में सम्पन्न होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी साधारण रहेगी। विवाह में ससुराल से आप को दहेज या वांछित धन सम्पत्ति की प्राप्ति नहीं होगी तथा बहुमूल्य उपहारों में भी न्यूनता रहेगी। सास ससुर से आपके संबंधों में विशेष अपनत्व नहीं रहेगा तथा यथोचित सम्मान की भी न्यूनता होगी। साथ ही वे भी आपको विशेष महत्व प्रदान नहीं करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उनका कोई ध्यान नहीं रखेंगी जिससे सास ससुर उनसे अप्रसन्न रहेंगे। देवर एवं ननदों को भी वह अपने उग्रव्यवहार से असन्तुष्ट रखेंगी जिससे वे भी उनको यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान नहीं करेंगे इससे परिवार की शांति प्रभावित होगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः साझेदारी के कार्यों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी

चाहिए।



आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगे क्योंकि आप एक व्यावहारिक पुरुष होंगे तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको अच्छा नहीं लगता। पैतृक सम्पत्ति आपको प्राप्त होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं परन्तु इसका आप पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा क्योंकि स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपके पास प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य होगा। साथ ही आवश्यक सुख संसाधन भी उपलब्ध होंगे। आप का दहेज के लेन देन में कोई विश्वास नहीं रहेगा तथा न ही आप उसे स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप इस सामाजिक बुराई के प्रति अन्य जनों को भी जागरूक करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आपके घर में कोई चोरी आदि की भी संभावना है लेकिन यह सामान्य होगी तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा पुलिस या अन्य जनों की सहायता से आपका चोरी का समान वापस मिल जाएगा जिससे हानि नहीं होगी। बीमा आदि करने से आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः आप इस पर अनावश्यक रकम या पूंजीनिवेश न करें। केवल चोरी के मामलों में प्रौढ़वस्था में आपको बीमे का लाभ मिल सकता है।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि न्यूनाधिक रूप से आप दुर्घटना से कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्यतया सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित दौरान आपकी- मन में इसके लिए पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी। ध्यान या समाधि के प्रति भी आप रुचिशील रहेंगे। आपकी अर्न्तदृष्टि प्रबल रहेगी अतः ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही धर्माचार्य या कोई उपदेशक भी हो सकते हैं। आप नियमित रूप से भगवत पूजा करेंगे तथा वेद एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपकी विद्वता रहेगी तथा इन विषयों पर आप धाराप्रवाह, लम्बे समय तक भाषण या उपदेश देने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप किसी धार्मिक संस्था के संस्थापक संचालक या अध्यक्ष अथवा सक्रिय सदस्य भी हो सकते हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगे इससे समाज से ख्याति तथा मान सम्मान अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप रुचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रंथों का भी व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करेंगे। दैनिक पूजन आदि करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी फलतः आपके पूर्वाभास सत्य होंगे तथा अन्य जनों के प्रति सही भविष्यवाणियां भी करने में समर्थ रहेंगे।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको प्रसिद्धि तथा धनऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकते हैं। साथ ही परोपकार तथा सामाजिक जनों की भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगे अपने पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा पूर्वजन्म के पुण्यों से इस जीवन में आनन्द एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक साधुजनों के सेवक मंदिर तालाब आदि परोपकार के लिए बनाने वाले एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। मेष राशि अग्नि तत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से युक्त होगा। तथा श्रम के भाव की अल्पता रहेगी तथा जीवन में आप वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करके मानसिक शांति की अनुभूति करेंगे।

आप के लिए आजीविका सेना, पुलिस, डाक्टर, इंजीनियर, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत इंजीनियरिंग, होटल प्रबंधक या कर्मचारी, अग्नि से संबंधित विभाग, शस्त्र विभाग एवं अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से आप को वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य एवं चरमोन्नति के लिए उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करें।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों के व्यापार से सुवर्ण लोहा तथा अन्य धातु कार्यों से, विद्युत उपकरणों का व्यापार या उत्पादन, औषधि का विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक वस्तु या होटल आदि के कार्य से व्यापार में इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित होंगी। इसके साथ ही अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगे तथा आपके प्रसंसक बनेंगे। अतः व्यापार में आपको उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यों का ही चुनाव करना चाहिए।

जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप को सामाजिक धार्मिक या अन्य संस्थाओं में भी किसी उच्च पदाधिकारी के रूप में मनोनीत किया जा सकता है जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप एक अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

आपके पिता एक पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण ध्यान रहेगा तथा उच्च स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रसिद्धि में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी सामान्यतया मधुरता रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त पिता के आप एक आज्ञाकारी पुत्र भी होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही महत्वाकांक्षा के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा इन सबकी प्राप्ति जीवन में दृढ़ता एवं परिश्रम से करने में समर्थ रहेंगे। प्रचुर मात्रा में आय के साथ साथ आपकी बचत करने की प्रवृत्ति भी रहेगी अतः आर्थिक रूप से आपको कभी परेशानी नहीं होगी। बड़े भाई बहिनों से आपको विशिष्ट सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता विद्यमान रहेगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाना पसन्द करेंगे तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक तरीकों से आप मित्रों तथा अन्य जनों का मनोरंजन करने में तत्पर रहेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान को रखने वाले व्यक्तियों से अधिक रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन मित्रों के सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में एक आदरणीय तथा प्रतिष्ठित पुरुष समझे जाएंगे। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा सहयोग प्रदान करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदा कदा आप स्वयं अत्यंत ही एकाकीपन की अनुभूति भी करेंगे। जीवन में आपको सामाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। साथ ही खेल आदि के क्षेत्र में भी आप दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगे। आप एक ईमानदार व्यक्ति होंगे अतः बेईमानी को सहन करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही धन को आप अपने परिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे।

जीवन में आपको आर्थिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। आपकी आवश्यकताएं अत्यंत ही सीधी सादी होंगी क्योंकि आप भौतिकता की ओर नहीं भागते तथा सामान्य रूप से ही आवश्यक वस्तुओं को घर में रखेंगे। आप शीघ्र लाभ की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ के प्रति अधिक इच्छुक रहेंगे। प्रारंभ से ही धन संग्रह के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ बचत भी करेंगे। अतः आपके समस्त पारिवारिक एवं सांसारिक व्यय आवश्यक रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति विशेष प्रभावित नहीं होगी। अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य में कल्याण संबन्धी योजनाओं पर भी आपका व्यय होगा तथा अपने धन को बड़ी बड़ी योजनाओं या निवेशों में लगाएंगे जहां से आपको अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

परिवार की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनकी समृद्धि एवं खुशहाली के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही एक मित्र की तरह उनका पालन करेंगे। आपकी समय समय पर लम्बी दूरी की यात्राएं भी होंगी जिससे लाभ होगा। आपकी यात्राएं विभागीय या व्यापार संबन्धी होंगी। साथ ही जीवन में आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से प्रसन्न रहेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में दशम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में अष्टम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वन्दिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

22 अप्रैल के बाद वरिष्ठ लोगों या उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में पदोन्नति होगी। भूमि से सम्बन्धित कार्यों में लाभ प्राप्त होगा। स्वतन्त्र व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। धन के अपव्यय से बचें।

22 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभूषण इत्यादि के क्रय की योजना बनेगी। परिवार में मांगलिक कार्यों पर धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं तो कुछ समय के लिए ऐसी योजनाओं को स्थगित रखें। यदि संपत्ति पर कोई बाद विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके लिए अधिक अनुकूल प्रतीत नहीं होता।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर राहु केतु के प्रभाव से परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है परन्तु अपनी सूझ-बूझ व आत्मविश्वास से उसे भी आप अनुकूल बना लो। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको समाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

22 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय अनुकूल होने लगेगा तथा बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पिता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके ससुराल पक्ष से मनमुटाव होने की सम्भावना है अतः सावधानी बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे आगे बढ़ेंगे और हर अवसर का समुचित लाभ उठायेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

आपके बच्चे नौकरी में उन्नति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह निश्चित है। दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है।

स्वास्थ्य

अष्टम स्थान का शनि अचानक ही स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में सावधानी बरतें। वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होने से स्वास्थ्य में अधिक गिरावट नहीं आयेगी परन्तु छोटी-मोटी समस्याओं, चिन्ताओं व बेचैनी से कार्य क्षमता प्रभावित होगी।

कभी कभी स्वास्थ्य रहते हुए भी कमजारी जैसा अनुभव होता रहेगा। ऐसी स्थिति में शारीरिक दुर्बलता व मानसिक तनाव को कम करने के लिए योग व व्यायाम का सहारा लें। नित्य प्रति मन्त्र जाप करें, सूर्य को जल दें तथा प्रातःकालीन शुद्ध हवा में प्राणायाम करके मानसिक तनाव से मुक्ति पायें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

22 अप्रैल के बाद षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आपको रोजगार प्राप्ति के योग भी बने हुए हैं।

यात्रा-तबादला

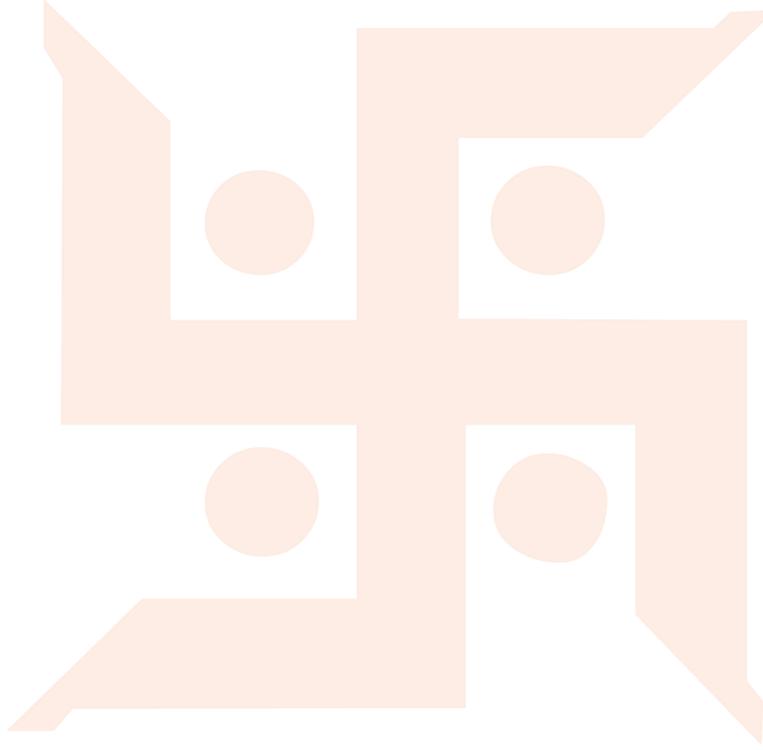
वर्ष के प्रारंभ में तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटीयात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से लम्बी यात्राओं का भी योग है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति होगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता होगी।

नौकरी में स्थानान्तरण होगा। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। जिससे परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। 11 नवम्बर के बाद तन्त्र यन्त्र मन्त्र इत्यादि गुप्त विद्याओं के प्रति आपका मन आकर्षित होगा।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- अपने घर में लड्डु गोपाल की मूर्ति रखें एवं प्रतिदिन विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में अष्टम में और राहु मीन राशि में नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में दशम में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दशम भाव में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। अनुभवी साझेदार के मिलने से व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा और व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

अप्रैल के बाद एकादश स्थान के गुरु आपके व्यापार में आय की मात्रा और बढ़ा सकते हैं। बड़े लोगो व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। अष्टम स्थान का शनि आपके कार्य व्यवसाय में अवरोध उत्पन्न करेंगे, परन्तु आप अपने विवेक से उसे भी अनुकूल बना लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन व रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के साथ साथ भौतिक सुख सुबिधा पर खर्च भी होगा।

अप्रैल के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही धनागम में भी वृद्धि होगी। निवेश से पूंजी में वृद्धि होगी। भाई-बहन या पुत्रादि के विवाह अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा।

अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंग में भी सफलता प्राप्त होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होने के शुभ योग बने हुए हैं। यदि सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह होने की सम्भावना है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। अष्टम स्थान का शनि कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी मोटी परेशानी बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता प्रदान करेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करें। शाकाहारी भोजन व संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। रोजगार प्राप्ति के योग बने हुए हैं।

अप्रैल के बाद समय व्यवसायिक शिक्षा हेतु अनुकूल है। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। मन को एकाग्र कर लक्ष्य की प्राप्ति करें।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान के राहु अचानक लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। वर्षारम्भ में अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है।

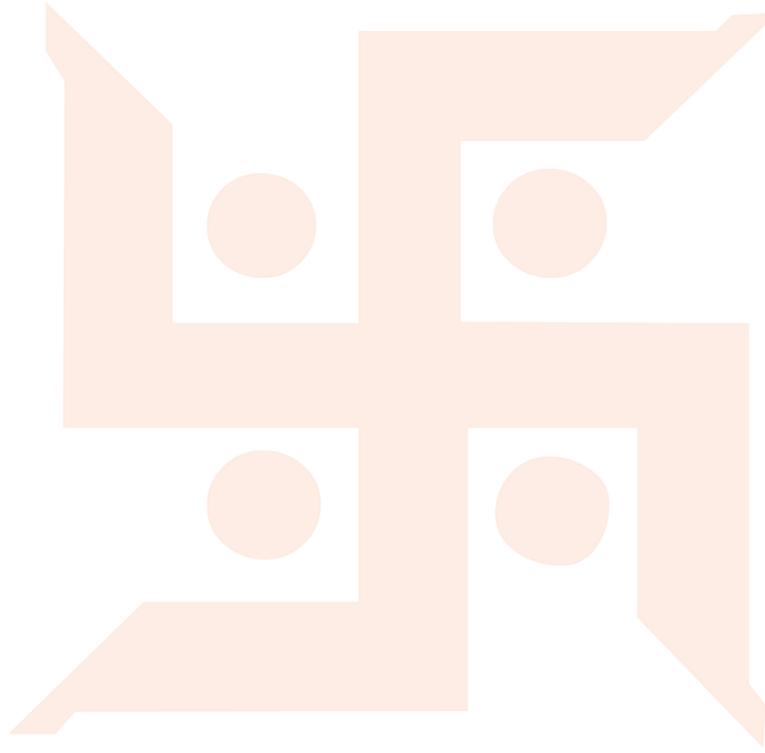
अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों की व्यावसाय संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति श्रद्धा-भक्ति बढ़ेगी।

- काले कुत्ते को रोटी दें।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु नवम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि नवम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि लग्न स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। अनुभवी लोगों कह सलाह अवश्य लें। व्यापार में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या बिरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें अन्यथा परिणाम प्रतिकूल होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों व पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद राहु एवं गुरुग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपको कोई बड़ा निवेश न करें। यदि निवेश करना अत्यधिक जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों से परामर्श लेकर निवेश करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे।

मई के बाद गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि विवाह योग्य है तो विवाह हो सकता है। मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है, अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी न होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे।

मई के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरुके पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग या मौसम जनित बीमारियों से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगी। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उत्तम शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ शुभ है।

मई के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल रोजगार प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु मई के बाद द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा करा सकते हैं।

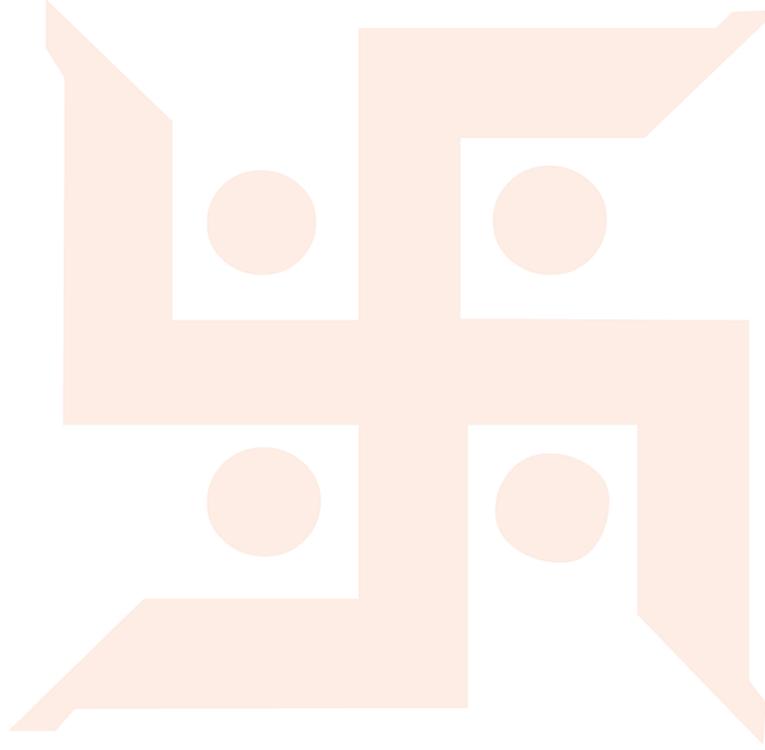
नवम स्थान के शनि आपको लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की उनकी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। मई के बाद गुरुग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान

पुण्य, भण्डारा इत्यादि धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली वस्तुएं जैसे दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा। द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह

के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून केबाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरु एवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वाह्न में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वाह्न में कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यों में व धार्मिक कार्यों में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

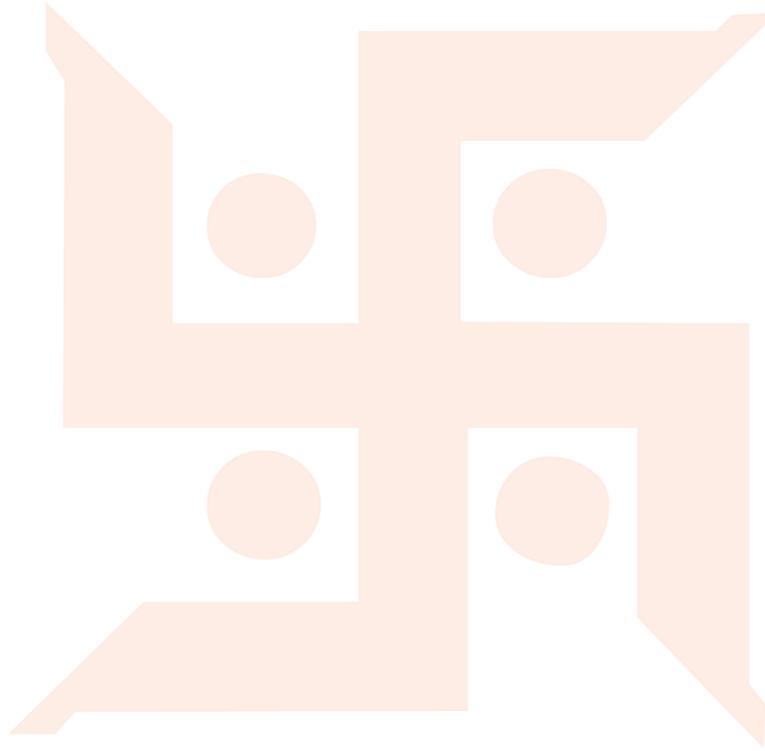
वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप

अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गि होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप अपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। चतुर्थ मंगल के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

09 अगस्त के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से आपका खुद का विकास होगा। आपका धैर्य आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। 18 फरवरी के बाद अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। परन्तु 14 जून से एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको कई अत्यंत लाभकारी अवसर भी मिलेंगे। अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के मंगल आपके घरेलू माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी माता स्वास्थ्य भी

अच्छ नहीं रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है।

09 अगस्त से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावुक लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके पिताजी एवं बड़े भाई के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। 18 फरवरी के बाद गर्भवती स्त्रियों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

09 अगस्त से बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भधान के लिए उत्तम समय रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान रह सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फिर भी आपको स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम करते रहना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

8 अगस्त के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 15 अक्टूबर से समय आपके लिए काफी बेहतर हो रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विदेश यात्रा का योग नहीं बन रहा परन्तु 18 फरवरी के बाद विदेश यात्राएं होंगी। राहु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। इस स्थानान्तरण से आप प्रसन्न नहीं रहेंगे।

14 जून से नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक ह्रंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु 18 फरवरी के बाद आप दान पुण्य करेंगे। राहु ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र जप या साधना अधिक करेंगे। साधु, संन्यासी, देवता एवं अपने से बड़े लोगों में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं एकादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुछठे भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

5 मार्च के बाद का समयआपकेकार्य-व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। परिश्रम की बदौलत उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपनी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। अधिकारी आपसे प्रभावित होंगे और उनका अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। 12 अगस्त से आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहींकरना है,नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है। 23 अक्टूबर से आपका समय अनुकूल हो रहा है फिर भी आपको सतर्क रहना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। एकादश स्थान का शनि आर्थिक उन्नति के लिए काफी शुभ है फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवही लोगों की सलाह अवश्य लें।

5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पुत्र एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन व्यय करेंगे। 12 अगस्त से 23अक्टूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

गुरु के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके

परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बढ़िया नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुआपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही न करें। दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी। आप स्वस्थ महसूस करेंगे परन्तु अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। पेट की तकलीफें व मोटापा बढ़ सकता है। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। 5 मार्च के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

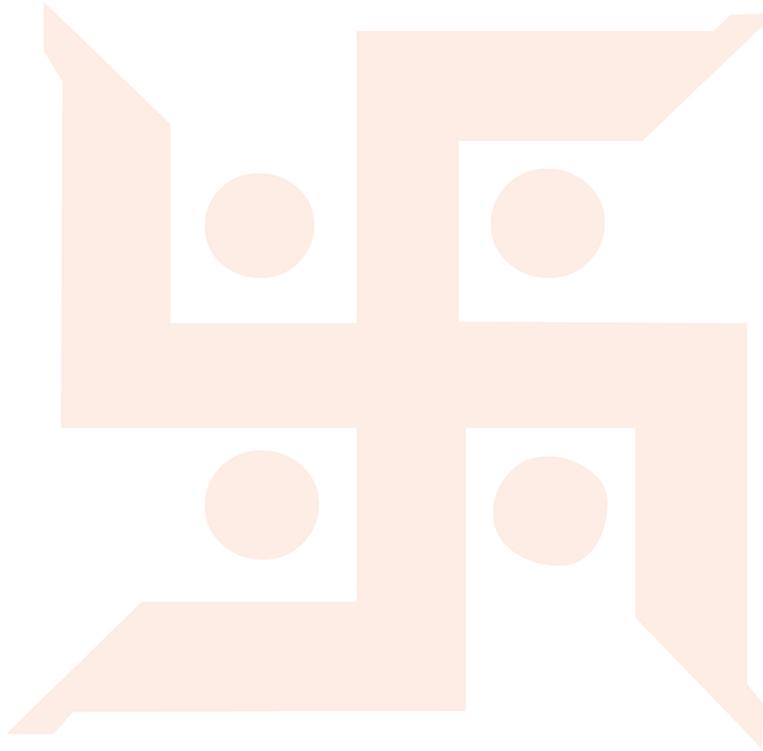
यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के

कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु 5 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा और बढ़ेगी।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।



दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(10/08/2022 - 10/08/2032)**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/08/2022 को आरम्भ और 10/08/2032 को समाप्त होगी।

चन्द्र षष्ठम भाव में अवस्थित है और षष्ठम भाव रोग, बीमारी, रोजगार अधीनस्थ कर्मचारियों या सेवकों, ऋण, शत्रुओं, मामा, कृपणता, तथा तीव्र व्यथा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि औसत अवधि होगी और उदास, राहत, दुःख तथा समस्याओं की अवधि होगी और आप परिस्थिति के अनुसार इनके साथ समझौता करने का प्रयास करेंगे।

स्वास्थ्य :

आप किसी बड़े या छोटे रोग से ग्रसित नहीं होंगे, अपना सन्तुलन बनाए रहेंगे और समय सारणी के अनुसार और स्फूर्ति तथा सक्रियता के साथ अपने कार्यों का संपादन करेंगे। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और शक्ति सामान्य रहेगी और आप अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और संपत्ति :

दस वर्ष की इस अवधि में आप के मामा आपकी बहुत सहायता करेंगे और उनकी सहायता के कारण आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप सुख-साधनों पर व्यय करेंगे और जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे।

व्यवसाय :

आपका व्यावसायिक जीवन सुखी होगा। अगर नौकरी पेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो नये व्यवसाय के अवसर मिलेंगे जिसमें आप सफल होंगे। घाटे के अवसर भी आ सकते हैं। आपके मामा आपकी समस्याओं के समय बहुत सहायता करेंगे। आपके मामा अपने जीवन में बहुत तरक्की करेंगे और आपके परिवार की सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा। किन्तु विषादपूर्ण मुद्रा और स्वभाव के कारण कभी-कभी समस्याएं आ सकती हैं जिसके फलस्वरूप आपका दैनिक जीवन अव्यवस्थित हो सकता है।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

विषादग्रस्त मुद्रा के कारण आप साहित्य के अध्ययन में लीन रहेंगे। आपका झुकाव ज्योतिष और खगोल की ओर भी हो सकता है।

अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(10/08/2022 - 11/06/2023)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 10/08/2022 को प्रारंभ होकर 10/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/08/2022 को प्रारंभ होकर 11/06/2023 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्रिका में चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। छठ भाव बीमारी, तीमारदारी, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। चंद्रमा मन का कारक है। छठे भाव में इसकी स्थिति के कारण यह अवधि अशुभ हो सकती है। उच्चाधिकारियों, सहकर्मियों और मातहतों के साथ संबंध कटु हो सकते हैं। चंद्र अगर उच्च का या शुभ हो, तो हानि कम होगी। कार्यक्षेत्र में गड़बड़ी या कुप्रबंधन का प्रसार संभव है; धनहानि भी हो सकती है। मष्तिष्क और यकृत की शक्ति कम हो सकती है।

खानपान कर नियंत्रण रखें। मष्तिष्क को सबल बनाने के लिए चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का मोती कनिष्ठिका में दायें हाथ में, सोमवार को प्रातःकाल दूध से धोकर, चंद्र मंत्र का 11 बार उच्चारण करने के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(11/06/2023 - 10/01/2024)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/08/2022 को प्रारंभ होकर 10/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 11/06/2023 को प्रारंभ होकर 10/01/2024 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतुप्त नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(10/01/2024 - 11/07/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 10/08/2022 को प्रारंभ हुई और 10/08/2032 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 10/01/2024 को प्रारंभ होकर 11/07/2025 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करेंगे। चरित्र पर नियंत्रण आवश्यक है क्योंकि आप विदेशियों या निम्न चरित्र के व्यक्तियों से संबंध स्थापित कर सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन के कारण मधुमेह हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु (11/07/2025 - 10/11/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/08/2022 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 11/07/2025 को प्रारंभ होकर 10/11/2026 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। बृहस्पति की लग्न में स्थित होकर कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धनी बनेंगे, ज्ञान और विवेक की वृद्धि होगी। उत्तम वस्त्र आदि की खरीदारी करेंगे और सामान्यतः प्रसन्नचित रहेंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। व्यायाम करने से स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यह समय आपके और परिवारजनों के लिए भाग्यशाली रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि (10/11/2026 - 10/06/2028)

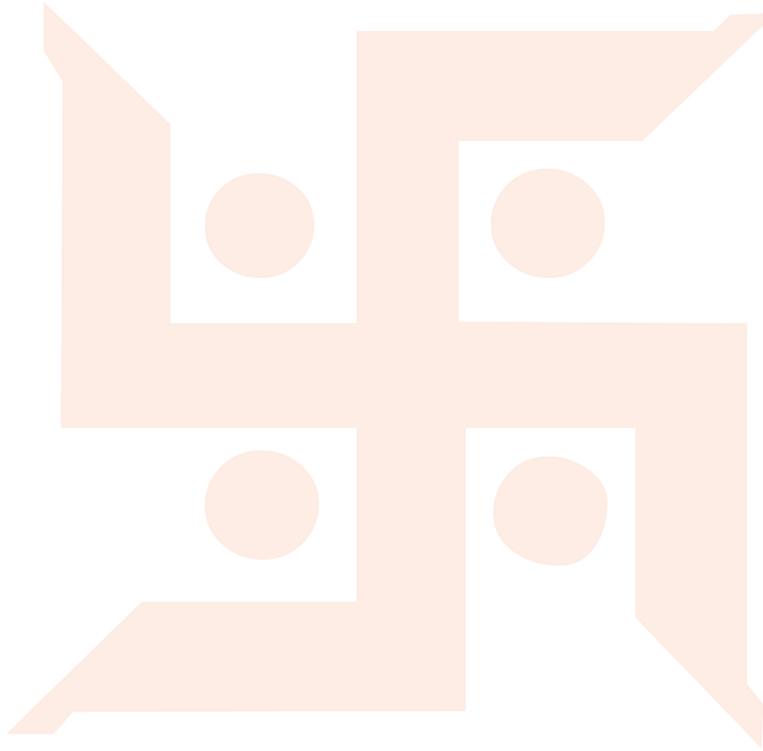
चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 10/08/2022 को प्रारंभ हुई और 10/08/2032 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 10/11/2026 को प्रारंभ होकर 10/06/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर

शनि आपकी कुंडली के 8, 12 और 3 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप झगड़ालू और ज़िद्दी मगर साहसी हो सकते हैं। अधिभोजन करने की प्रवृत्ति रहेगी। व्यापारियों को ठेकेदारी, खनन, भवन निर्माण आदि से लाभ होगा। अवसरों का लाभ उठायें, क्योंकि छटे भाव में शनि की स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए पीपल को जल दें, मछलियों को तालाब, घर के मछलीगृह आदि में आटे की गोलियां खिलाएं। शिवजी की उपासना करें।



योग

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः ।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनून्म् ।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः ॥
वाहलीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान् ।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः ।

॥ मानसागरी ॥ अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3 ॥

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है ।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अर्धग प्रत्यर्धग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अर्धकुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पाँव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है । जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है । वाहलीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे ।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे । आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे ।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में

अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम् ।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ॥

॥ सारावली ॥ अ. 35 /श्लोक 64 ॥

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः ॥
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम् ।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिदुःखी ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 14, 17 ॥

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः ।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः ।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 57, 65 ॥

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

अस्त्र योग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश ।
शत्रून् बलिष्ठान् बलवन्निगृह्य क्रूरप्रवृत्त्या सहितोऽभिमानी ।
व्रणाङ्कितताङ्गश्च विवादकारी स्यादस्त्रयोगे दृढगात्रयुक्तः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 /श्लोक 44, 50 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव का स्वामी अस्त न होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित हो तथा श्रेष्ठ (उत्तम) स्थान में बैठा हो और षष्ठ भाव शुभ ग्रह से युक्त या निरीक्षित हो तो अस्त्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपनी शक्ति से बलवान्, शत्रुओं को परास्त करने वाले, क्रूर प्रवृत्ति वाले और अभिमानी होंगे। आप के शरीर के अवयव दृढ़ होंगे किन्तु शरीर में घाव के चिन्ह से युक्त और झगड़ालू प्रवृत्ति के होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

विपरीत राज योग

रन्ध्रेशो षष्ठगो ।
अन्योन्यर्क्षगता निरीक्षणयुताश्चान्यैरयुक्तेक्षिता

जातोऽसौ नृपतिः प्रशस्तविभवो राजाधिराजेश्वरः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 ॥ पृ. 135 ॥

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश षष्ठ (शत्रु) भाव में स्थित हो इन भावों के स्वामी एक दूसरे की राशि में हों या एक दूसरे से वीक्षित हों और अन्य भावों के स्वामीयों से युत या निरीक्षित न हों तो विपरीत राज योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विपरीत राजयोग के प्रभाव से प्रभावित होकर राज सुख से युत होंगे। आप अनुमंडलाधिकारी, विधायक, मंत्री आदि पद पर आसीन होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।

शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो

अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वाहनादि प्राप्ति योग

वाहनेशे बलयुते वाहने शुभसंयुते ।

शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादिफलं भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-152 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश बलिष्ठ होकर सुख स्थान में शुभ युक्त या दृष्ट हो तो वाहन आदि सुख प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

गड़ा धन प्राप्ति योग

लाभेशः सुखराशिगः शुभयुतो निक्षेपवित्तप्रदः ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ.12/श्लो.-137 ॥

जन्मपत्रिका में यदि लाभेश शुभ ग्रह से युक्त सुख स्थान में स्थित हो तो जातक को गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य,गुरु,शनि

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भूमि में गड़ा हुआ धन प्राप्त हो ऐसी संभावना है।

त्रिकालज्ञ योग

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ।

त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-53 ॥

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र बुध से युक्त हो, गुरु अपने नवांश में मृद्वंश से युक्त हो बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकालज्ञ योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूत-भविष्य वर्तमान के ज्ञाता होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,केतु

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।

मूर्धातिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभागभवेत्॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

षष्ठाष्टमे सेन्द्रौ शनौ गुल्मजम् ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि के साथ चंद्रमा स्थित हो तो गुल्म रोग होता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र, शनि

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको गुल्म/तिल्ली/यकृत रोग होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राग्निः ।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराशंशतः ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, सूर्य

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराशंशकेऽपि वा ।

पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-19 ॥

यदि जन्मकुंडली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

षष्ठेगपे द्विभार्यः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 302 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश षष्ठ भाव में चला गया हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात् आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.8/व्ययभाव-4 ॥

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

”अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, गुरु, चंद्र

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।